मरकुस

यीशु के आने की तैयारी

1 यह परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के शुभ संदेश
का प्रारम्भ है। 2भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में
लिखा है कि:

"सुन! मैं अपने दूत को
तुझसे पहले भेज रहा हूँ।
वह तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।"

मलाकी 3:1

3 "जंगल में किसी पुकारने वाले का शब्द
सुनाई दे रहा है:
'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो।
और उसके लिये राहें सीधी बनाओ।'"

यशायाह 40:3

4यूहन्ना लोगों को जंगल में बपतिस्मा* देता आया था।
उसने लोगों से बपतिस्मा लेने को कहा कि वे अपने मन
फिराव को दिखा सकें और उनके पापों की क्षमा हो।
5फिर समूचे यहूदिया देश के और यरुशलेम के लोग उसके
पास गये और उस ने यर्दन नदी में उन्हें बपतिस्मा दिया।
क्योंकि उन्होंने अपने पाप मान लिये थे। 6यूहन्ना ऊँट के
बालों के बने वस्त्र पहनता था और कमर पर चमड़े की
पेटी बाँधे रहता था। वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाया
करता था। 7वह इस बात का प्रचार करता था: "मेरे बाद
मुझसे अधिक शक्तिशाली एक व्यक्ति आ रहा है। मैं इस
योग्य भी नहीं हूँ कि झुक कर उसके जूतों के बन्ध तक
खोल सकूँ। 8मैं तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह
पवित्र–आत्मा से तुम्हें बपतिस्मा देगा।"

यीशु का बपतिस्मा और उसकी परीक्षा

9उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील
आया और यर्दन नदी में उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
10जैसे ही वह जल से बाहर आया उसने आकाश को खुले
हुए देखा। और देखा कि एक कबूतर के रूप में
आत्मा उस पर उतर रहा है। 11फिर आकाशवाणी हुई:
"तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुझसे बहुत
प्रसन्न हूँ।"

12फिर आत्मा ने उसे तत्काल बियाबान जंगल में भेज
दिया। 13जहाँ चालीस दिन तक शैतान उसकी परीक्षा लेता
रहा। वह जंगली जानवरों के साथ रहा और स्वर्गदूतों उसकी
सेवा करते रहे।

यीशु द्वारा कुछ शिष्यों का चयन

14युहन्ना को बंदीगृह में डाले जाने के बाद यीशु गलील
आया। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार
करने लगा। 15उसने कहा, "समय पूरा हो चुका है।
परमेश्वर का राज्य आ रहा है। मन फिराओ और
सुसमाचार में विश्वास करो।"

16जब यीशु गलील झील के किनारे से हो कर जा रहा
था उसने शमौन और शमौन के भाई अन्द्रियास को देखा।
क्योंकि वे मछुए थे इसलिए झील में जाल डाल रहे थे।
17यीशु ने उनसे कहा, "आओ, और मेरे पीछे हो लो। मैं
तुम्हें लोगों को एकत्र करने वाले बनाऊँगा।" 18उन्होंने
तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे चल पड़े।

19फिर थोड़ा आगे बढ़ कर यीशु ने जब्दी के बेटे याकूब
और उसके भाई युहन्ना को देखा। वे अपनी नाव में जालों
की मरम्मत कर रहे थे। 20उसने उन्हें तुरंत बुलाया। सो
वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव में छोड़ कर
उसके पीछे चल पड़े।

बपतिस्मा यह यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है पानी
में गोता देना। यह एक धार्मिक प्रक्रिया है।

दुष्टात्मा के चंगुल से छुटकारा

21और कफरनहूम पहुँचे। फिर अगले सब्त के दिन
यीशु प्रार्थनासभा में गया और लोगों को उपदेश देने लगा।
22उसके उपदेशों पर लोग चकित हुए। क्योंकि वह उन्हें
किसी शास्त्र–ज्ञाता की तरह नहीं बल्कि एक अधिकारी
की तरह उपदेश दे रहा था। 23उनकी यहूदी प्रार्थना सभा
में संयोग से एक ऐसा व्यक्ति भी था जिसमें कोई दुष्टात्मा
समायी थी। वह चिल्ला कर बोला, 24"नासरत के यीशु! तुझे
हम से क्या चाहिये? क्या तू हमारा नाश करने आया है?
मैं जानता हूँ तू कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र जन है!"
25इस पर यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, "चुप रह!
और इसमें से बाहर निकल!" 26दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति
को झिंझोड़ा और वह ज़ोर से चिल्लाती हुई उसमें से निकल
गयी।
27हर व्यक्ति चकित हो उठा। इतना चकित, कि सब
आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, "यह क्या है? अधिकार
के साथ दिया गया एक नया उपदेश! यह दुष्टात्माओं को
भी आज्ञा देता है और वे उसे मानती हैं।" 28इस तरह
गलील और उसके आसपास हर कहीं यीशु का नाम जल्दी
ही फैल गया।

यीशु द्वारा अनेक व्यक्तियों का चंगा किया जाना

29फिर वे प्रार्थना सभागार से निकल कर याकूब और
यूहन्ना के साथ सीधे शमौन और अन्द्रियास के घर पहुँचे।
30शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी इसलिए उन्होंने यीशु
को तत्काल उसके बारे में बताया। 31यीशु उसके पास
गया और हाथ पकड़ कर उसे उठाया। तुरन्त उसका
ज्वर उतर गया और वह उनकी सेवा करने लगी।
32सूरज डूबने के बाद जब शाम हुई तो वहाँ के लोग
सभी रोगियों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को उसके
पास लाये। 33सारा नगर उसके द्वार पर उमड़ पड़ा। 34उसने
तरह तरह के रोगों से पीड़ित बहुत से लोगों को चंगा किया
और बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया।
क्योंकि वे उसे जानती थीं, इसलिये उसने उन्हें बोलने नहीं
दिया।

लोगों को सुसमाचार सुनाने की तैयारी

35अँधेरा रहते, बड़ी सुबह वह घर छोड़ कर किसी
एकांत स्थान पर चला गया जहाँ उसने प्रार्थना की। 36किन्तु
शमौन और उसके साथी उसे ढूँढने निकले 37और उसे
पा कर बोले, "हर व्यक्ति तेरी खोज में है!"
38इस पर यीशु ने उनसे कहा, "हमें दूसरे नगरों में
जाना ही चाहिये ताकि वहाँ भी उपदेश दिया जा सके क्योंकि
मैं इसी के लिए आया हूँ।" 39इस तरह वह गलील में सब
कहीं उनकी प्रार्थना सभाओं में उपदेश देता और दुष्टात्माओं
को निकालता गया।

कोढ़ से छुटकारा

40फिर एक कोढ़ी उसके पास आया। उसने उसके
सामने झुक कर उससे विनती की और कहा, "यदि तू
चाहे, तो तू मुझे ठीक कर सकता है।"
41उसे उस पर दया आयी और उसने अपना हाथ फैला
कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छे हो
जाओ!" 42और उसे तत्काल कोढ़ से छुटकारा मिल गया।
वह पूरी तरह शुद्ध हो गया।
43यीशु ने उसे कड़ी चेतावनी दी और तुरन्त भेज
दिया। 44यीशु ने उससे कहा, "देख इसके बारे में तू
किसी को कुछ नहीं बताना। किन्तु याजक के पास जा
और उसे अपने आप को दिखा। और मूसा के नियम के
अनुसार अपने ठीक होने की भेंट अर्पित कर ताकि हर
किसी को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।" 45परन्तु वह
बाहर जाकर खुले तौर पर इस बारे में लोगों से बातचीत
करके इसका प्रचार करने लगा। इससे यीशु फिर कभी
नगर में खुले तौर पर नहीं जा सका। वह एकांत स्थानों
में रहने लगा किन्तु लोग हर कहीं से उसके पास आते
रहे।

लकवे के मारे का चंगा किया जाना

2 कुछ दिनों बाद यीशु वापस कफरनहूम आया
तो यह समाचार फैल गया कि वह घर में है। 2फिर
वहाँ इतने लोग इकट्ठे हुए कि दरवाज़े के बाहर भी तिल
धरने तक को जगह न बची। जब यीशु लोगों को उपदेश दे
रहा था 3तो कुछ लोग एक लकवे के मारे को चार
आदमियों से उठवाकर वहाँ लाये। 4किन्तु भीड़ के कारण
वे उसे यीशु के पास नहीं ले जा सके। इसलिये जहाँ यीशु
था उसके ऊपर की छत का कुछ भाग उन्होंने हटाया
और जब वे खोद कर छत में एक खुला सूराख बना चुके
तो उन्होंने जिस बिस्तर पर लकवे का मारा लेटा हुआ था

उसे नीचे लटका दिया। 5उनके इतने गहरे विश्वास को देख कर यीशु ने लकवे के मारे से कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"

6उस समय वहाँ कुछ धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे अपने अपने मन में सोच रहे थे। 7 "यह व्यक्ति इस तरह बात क्यों करता है? यह तो परमेश्वर का अपमान करता है। परमेश्वर के सिवा, और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?"

8यीशु ने अपनी आत्मा में तुरंत यह जान लिया कि वे मन ही मन क्या सोच रहे हैं। वह उनसे बोला, "तुम अपने मन में ये बातें क्यों सोच रहे हो? 9सरल क्या है: इस लकवे के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना कि उठ, अपना बिस्तर उठा और चल दे? 10किन्तु मैं तुम्हें प्रमाणित करूँगा कि इस पृथ्वी पर मनुष्य के पुत्र को यह अधिकार है कि वह पापों को क्षमा करे।" फिर यीशु ने उस लकवे के मारे से कहा, 11"मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और अपने घर जा।" 12सो वह खड़ा हुआ, तुरंत अपना बिस्तर उठाया और उन सब के देखते देखते ही बाहर चला गया। यह देखकर वे अचरज में पड़ गये। उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा की और बोले, "हमने ऐसी बातें कभी नहीं देखीं!"

13एक बार फिर यीशु झील के किनारे गया तो समूची भीड़ उसके पीछे हो ली। यीशु ने उन्हें उपदेश दिया। 14चलते हुए उसने हलफई के बेटे लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देख कर उससे कहा, "मेरे पीछे आ" सो लेवी खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

15इसके बाद जब यीशु अपने चेलों या शिष्यों समेत उसके घर भोजन कर रहा था तो बहुत से कर वसूलने वाले और पापी लोग भी उसके साथ भोजन कर रहे थे। इनमें बहुत से वे लोग थे जो उसके पीछे पीछे चले आये थे। 16जब फ़रीसियों के कुछ धर्मशास्त्रियों ने यह देखा कि यीशु पापियों और कर वसूलने वालों के साथ भोजन कर रहा है तो उन्होंने उसके अनुयायिओं से कहा, "यीशु कर वसूलने वालों और पापियों के साथ भोजन क्यों करता है?"

17यीशु ने यह सुनकर उनसे कहा, "चंगे–भले लोगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, रोगियों को ही वैद्य की आवश्यकता होती है। मैं धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।"

यीशु अन्य धर्मगुरुओं से भिन्न है

18युहन्ना के शिष्य और फरीसियों के शिष्य उपवास किया करते थे। कुछ लोग यीशु के पास आये और उससे पूछने लगे, "यूहन्ना और फ़रीसियों के चेले उपवास क्यों रखते हैं? और तेरे शिष्य उपवास क्यों नहीं रखते?"

19इस पर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही बराती जब तक दूल्हे के साथ हैं, उनसे उपवास रखने की उम्मीद नहीं की जाती। जब तक दूल्हा उनके साथ है, वे उपवास नहीं रखते। 20किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उनसे अलग कर दिया जायेगा और तब, उस समय, वे उपवास करेंगे।

21"कोई भी किसी पुराने वस्त्र में अनसिकुड़े कोरे कपड़े का पैबन्द नहीं लगाता। और यदि लगाता है तो कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने कपड़े को भी ले बैठता है और फटे कपड़े की खोंच और भी बढ़ जाती है। 22और इसी तरह पुरानी मशक में कोई भी नयी दाखरस नहीं भरता। और यदि कोई ऐसा करे तो नयी दाखरस पुरानी मशक को फाड़ देगी और मशक के साथ साथ दाखरस भी बर्बाद हो जायेगी। इसीलिये नयी दाखरस नयी मशकों में ही भरी जाती है।"

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

23ऐसा हुआ कि सब्त के दिन यीशु खेतों से होता हुआ जा रहा था। जाते जाते उसके शिष्य खेतों से अनाज की बालें तोड़ने लगे। 24इस पर फरीसी यीशु से कहने लगे, "देख सब्त के दिन वे ऐसा क्यों कर रहे हैं जो उचित नही है?"

25इस पर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी दाऊद के विषय में नहीं पढ़ा कि उसने क्या किया था जब वह और उसके साथी संकट में थे और उन्हें भूख लगी थी? 26क्या तुमने नहीं पढ़ा कि, जब अबियातार महा याजक था तब, वह परमेश्वर के मन्दिर में कैसे गया और परमेश्वर को भेंट में चढ़ाई रोटियाँ उसने कैसे खाईं (जिनका खाना महायाजक को छोड़ कर किसी को भी उचित नहीं है) कुछ रोटियाँ उसने उनको भी दी थीं जो उसके साथ थे?"

27यीशु ने उनसे कहा, "सब्त मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के लिये। 28इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त का भी प्रभु है।"

सूखे हाथ वाले को चंगा करना

3 एक बार फिर यीशु यहूदी प्रार्थनालय में गया। वहाँ
एक व्यक्ति था जिसका एक हाथ सूख चुका था।
2कुछ लोग घात लगाये थे कि वह उसे ठीक करता है कि
नहीं, ताकि उन्हें उस पर दोष लगाने का कोई कारण
मिल जाये। 3यीशु ने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "लोगों
के सामने खड़ा हो जा।"

4और लोगों से पूछ, "सब्त के दिन किसी का भला
करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना? किसी का
जीवन बचाना ठीक है या किसी को मारना?" किन्तु वे
सब चुप रहे।

5फिर यीशु ने क्रोध में भर कर चारों ओर देखा और
उनके मन की कठोरता से वह बहुत दुखी हुआ। फिर
उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।" उसने
हाथ बढ़ाया, उसका हाथ पहले जैसा ठीक हो गया। 6तब
फरीसी वहाँ से चले गये और हेरोदियों के साथ मिल कर
यीशु के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे कि वे उसकी हत्या कैसे
कर सकते हैं!

बहुतों का यीशु के पीछे हो लेना

7यीशु अपने शिष्यों के साथ झील गलील पर चला गया।
उसके पीछे एक बहुत बड़ी भीड़ भी हो ली जिसमें गलील,
8यहूदिया, यरुशलेम, इदूमिया और यर्दन नदी के पार के
तथा सूर और सैदा के लोग भी थे। लोगों की यह भीड़ उन
कामों के बारे में सुनकर उसके पास आयी थी जिन्हें वह
करता था। 9भीड़ के कारण उसने अपने शिष्यों से कहा
कि वे उसके लिये एक छोटी नाव तैयार रखें ताकि भीड़
उसे दबा न ले। 10यीशु ने बहुत से लोगों को चंगा किया था
इसलिये बहुत से वे लोग जो रोगी थे, उसे छूने के लिये भीड़
में ढकेलते रास्ता बनाते उमड़े चले आ रहे थे। 11जब
कभी दुष्टात्माएँ यीशु को देखतीं वे उसके सामने नीचे
गिर पड़तीं और चिल्ला कर कहतीं "तू परमेश्वर का पुत्र
है!" 12किन्तु वह उन्हें चेतावनी देता कि वे सावधान रहें
और इसका प्रचार न करें।

यीशु द्वारा अपने बारह प्रेरितों का चयन

13फिर यीशु एक पहाड़ पर चला गया और उसने
जिनको वह चाहता था, अपने पास बुलाया। वे उसके
पास आये। 14जिनमें से उसने बारह को चुना। और उन्हें
प्रेरित की पदवी दी। उसने उन्हें चुना ताकि वे उसके साथ
रहें और वह उन्हें उपदेश प्रचार के लिये भेजे 15और वे
दुष्टात्माओं को खदेड़ बाहर निकालने का अधिकार रखें।
16इस प्रकार उसने बारह पुरुषों की नियुक्ति की। ये
थे–शमौन (जिसे उसने पतरस नाम दिया); 17जब्दी का
पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना (जिनका नाम
उसने बूअनर्गिस रखा, जिसका अर्थ है "गर्जन का पुत्र");
18अंद्रियास, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई का
पुत्र याकूब, तद्दी और शमौन जिलौती या कनानी 19तथा
यहूदा इस्करियोती जिसने आगे चल कर यीशु को धोखे से
पकड़वाया था।

यहूदियों का कथन: यीशु में शैतान का वास है

20तब वे सब घर चले गये। जहाँ एक बार फिर इतनी
बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी कि यीशु और उसके शिष्य
खाना तक नहीं खा सके। 21जब उसके परिवार के लोगों
ने यह सुना तो वे उसे लेने चल दिये क्योंकि लोग कह रहे
थे कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है।

22यरुशलेम से आये धर्मशास्त्री कहते थे, "उसमें
बालज़ेबुल यानी शैतान समाया है। वह दुष्टात्माओं के सरदार
की शक्ति के कारण ही दुष्टात्माओं को बाहर निकालता
है।"

23यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और दुष्टान्तों का
प्रयोग करते हुए उनसे कहने लगा, "शैतान, शैतान को
कैसे निकाल सकता है? 24यदि किसी राज्य में अपने ही
विरुद्ध फूट पड़ जाये तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकेगा।
25और यदि किसी घर में अपने ही भीतर फूट पड़ जाये तो
वह घर बच नहीं पायेगा। 26इसलिए यदि शैतान स्वयं अपना
विरोध करता है और फूट डालता है तो वह बना नहीं रह
सकेगा और उसका अंत हो जायेगा। 27किसी शक्तिशाली
के मकान में घुस कर उसके माल–असबाब को लूट कर
निश्चय ही कोई तब तक नहीं ले जा सकता जब तक
सबसे पहले वह उस शक्तिशाली व्यक्ति को बाँध न दे। ऐसा
करके ही वह उसके घर को लूट सकता है। 28मैं तुमसे
सत्य कहता हूँ, लोगों को हर बात की क्षमा मिल सकती
है, उनके पाप और जो निन्दा–बुरा भला कहना–उन्होंने
किये हैं, वे भी क्षमा किये जा सकते हैं। 29किन्तु पवित्र
आत्मा को जो कोई भी अपमानित करेगा, उसे क्षमा कभी
नहीं मिलेगी। वह अनन्त पाप का भागी है।"

30यीशु ने यह इसलिये कहा था कि कुछ लोग कह रहे
थे इसमें कोई दुष्ट आत्मा समाई है।

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार

31तभी उसकी माँ और भाई वहाँ आये और बाहर खड़े
हो कर उसे भीतर से बुलवाया। 32यीशु के चारों ओर भीड़
बैठी थी। उन्होंने उससे कहा, "देख तेरी माता, तेरे भाई
और तेरी बहनें तुझे बाहर बुला रहे हैं।"

33यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई
कौन हैं?" 34उसे घेर कर चारों ओर बैठे लोगों पर उसने
दृष्टि डाली और कहा, "ये है मेरी माँ और मेरे भाई! 35जो
कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही मेरा भाई,
बहन और माँ है।"

बीज बोने का दृष्टान्त

4 उसने झील के किनारे उपदेश देना फिर शुरू कर
दिया। वहाँ उसके चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठी हो
गयी। इसलिये वह झील में खड़ी एक नाव पर जा बैठा।
और सभी लोग झील के किनारे धरती पर खड़े थे। 2उसने
दृष्टांत देकर उन्हें बहुत सी बातें सिखाईं। अपने उपदेश में
उसने कहा, 3"सुनो! एक बार एक किसान बीज बोने के
लिए निकला। 4तब ऐसा हुआ कि जब उसने बीज बोये तो
कुछ मार्ग के किनारे गिरे। पक्षी आये और उन्हे चुग गए।
5दूसरे कुछ बीज पथरीली धरती पर गिरे जहाँ बहुत मिट्टी
नहीं थी। वे गहरी मिट्टी न होने के कारण जल्दी ही उग
आये 6और जब सूरज उगा तो वे झुलस गये और जड़ न
पकड़ पाने के कारण मुरझा गये। 7कुछ और बीज काँटों
में जा गिरे। काटें बड़े हुए और उन्होंने उन्हें दबा लिया
जिससे उनमें दाने नहीं पड़े। 8कुछ बीज अच्छी धरती पर
गिरे। वे उगे, उनकी बढ़वार हुई और उन्होंने अनाज पैदा
किया। तीस गुणी, साठ गुणी और यहाँ तक कि सौ गुणी
अधिक फसल उतरी।"

9फिर उसने कहा, "जिसके पास सुनने को कान हैं,
वह सुने!"

यीशु का कथन: वह दृष्टान्तों का प्रयोग क्यों करता है

10फिर जब वह अकेला था तो उसके बारह शिष्यों
समेत जो लोग उसके आसपास थे, उन्होंने उससे दृष्टान्तों
के बारे में पूछा।

11यीशु ने उन्हें बताया, "तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य
का भेद दे दिया गया है किन्तु उनके लिये जो बाहर के हैं,
सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं:

12 'ताकि वे देखें और देखते ही रहें,
पर उन्हें कुछ सूझे नहीं,
सुनें और सुनते ही रहें
पर कुछ समझें नहीं।
ऐसा न हो जाए कि वे फिरें
और क्षमा किए जाएँ।'"

यशायाह 6:9-10

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या

13उसने उनसे कहा, "यदि तुम इस दृष्टान्त को नहीं
समझते तो किसी भी और दृष्टान्त को कैसे समझोगे?
14किसान जो बोता है, वह वचन है। 15कुछ लोग किनारे
का वह मार्ग हैं जहाँ वचन बोया जाता है। जब वे वचन
को सुनते हैं तो तत्काल शैतान आता है और जो वचन
रूपी बीज उनमें बोया गया है, उसे उठा ले जाता है
16और कुछ लोग ऐसे हैं जैसे पथरीली धरती में बोया
बीज। जब वे वचन को सुनते हैं तो उसे तुरन्त आनन्द के
साथ अपना लेते हैं 17किन्तु उनके भीतर कोई जड़ नहीं
होती, इसलिए वे कुछ ही समय ठहर पाते हैं और बाद में
जब वचन के कारण उन पर विपत्ति आती है और उन्हें
यातनाएँ दी जाती हैं, तो वे तत्काल अपना विश्वास खो
बैठते हैं। 18और दूसरे लोग ऐसे हैं जैसे काँटों में बोये गये
बीज। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं 19किन्तु इस जीवन
की चिंताएँ, धन दौलत का लालच और दूसरी वस्तुओं को
पाने की इच्छा उनमें आती है और वचन को दबा लेती है।
जिससे उस पर फल नहीं लग पाता। 20और कुछ लोग
उस बीज के समान हैं जो अच्छी धरती पर बोया गया है। ये
वे हैं जो वचन को सुनते हैं और ग्रहण करते हैं। इन पर
फल लगता है कहीं तीस गुणा, कहीं साठ गुणा तो कहीं सौ
गुणे से भी अधिक।"

जो तुम्हारे पास है, उसका उपयोग करो

21फिर उसने उनसे कहा, "क्या किसी दिये को कभी
इसलिये लाया जाता है कि उसे किसी बर्तन के या बिस्तर
के नीचे रख दिया जाये? क्या इसे दीवट के ऊपर रखने

के लिये नहीं लाया जाता? 22क्योंकि कुछ भी ऐसा गुप्त नहीं है जो प्रकट नहीं होगा और कोई रहस्य ऐसा नहीं है जो प्रकाश में नहीं आयेगा। 23यदि किसी के पास कान हैं तो वह सुने!"

24फिर उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम सुनते हो उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो, जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी नाप से तुम भी नापे जाओगे। बल्कि तुम्हारे लिये उसमें कुछ और भी जोड़ दिया जायेगा। 25जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिस किसी के पास नहीं है, उसके पास जो कुछ है, वह भी ले लिया जायेगा।"

बीज का दृष्टान्त

26फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये। 27रात को सोये और दिन को जागे और फिर बीज में अंकुर निकलें, वे बढ़ें और पता ही न चले कि यह सब कैसे हो रहा है। 28धरती अपने आप अनाज उपजाती है। पहले अंकुर फिर बाल और फिर बालों में भरपूर अनाज। 29जब अनाज पक जाता है तो वह तुरन्त उसे हंसिये से काटता है क्योंकि फसल काटने का समय आ जाता है।"

राई के दाने का दृष्टान्त

30फिर उसने कहा, "हम कैसे बतायें कि परमेश्वर का राज्य कैसा है? उसकी व्याख्या करने के लिये हम किस उदाहरण का प्रयोग करें? 31वह राई के दाने जैसा है जो जब धरती में बोया जाता है तो बीजों में सबसे छोटा होता है। 32किन्तु जब वह रोप दिया जाता है तो बढ़ कर भूमि के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। उसकी शाखाएँ इतनी बड़ी हो जाती हैं कि हवा में उड़ती चिड़ियाएँ उसकी छाया में घोंसला बना सकती हैं।"

33ऐसे ही और बहुत से दृष्टान्त देकर वह उन्हें वचन सुनाया करता था। वह उन्हें, जितना वे समझ सकते थे, बताता था। 34बिना किसी दृष्टान्त का प्रयोग किये वह उनसे कुछ भी नहीं कहता था। किन्तु जब अपने शिष्यों के साथ वह अकेला होता तो सब कुछ का अर्थ बता कर उन्हें समझाता।

बवंडर को शांत करना

35उस दिन जब शाम हुई, यीशु ने उनसे कहा, "चलो, उस पार चलें।" 36इसलिये, वे भीड़ को छोड़ कर, जैसे वह था वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले। उसके साथ और भी नावें थीं। 37एक तेज बवंडर उठा। लहरें नाव पर पछाड़ें मार रही थीं। नाव पानी से भर जाने को थी। 38किन्तु यीशु नाव के पिछले भाग में तकिया लगाये सो रहा था। उन्होंने उसे जगाया और उससे कहा, "हे गुरु, क्या तुझे ध्यान नहीं है कि हम डूब रहे हैं?"

39यीशु खड़ा हुआ। उसने हवा को डाँटा और लहरों से कहा, "शान्त हो जाओ! थम जाओ!" तभी बवंडर थम गया और चारों तरफ असीम शांति छा गयी।

40फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम डरते क्यों हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं है?"

41किन्तु वे बहुत डर गये थे। फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा, "आखिर यह है कौन कि हवा और पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं?"

दुष्टात्माओं से छुटकारे

5 फिर वे झील के उस पार गिरासेनियों के देश पहुँचे। 2यीशु जब नाव से बाहर आया तो कब्रों में से निकल कर तत्काल एक ऐसा व्यक्ति जिस में दुष्टात्मा का प्रवेश था, उससे मिलने आया। 3वह कब्रों के बीच रहा करता था। उसे कोई नहीं बाँध सकता था, यहाँ तक कि ज़ंजीरों से भी नहीं। 4क्योंकि उसे जब जब हथकड़ी और बेड़ियाँ डाली जातीं, वह उन्हें तोड़ देता। ज़ंजीरों के टुकड़े-टुकड़े कर देता और बेड़ियों को चकनाचूर। कोई भी उसे काबू नहीं कर पाता था। 5क़ब्रों और पहाड़ियों में रात-दिन लगातार, वह चीखता-पुकारता अपने को पत्थरों से घायल करता रहता था।

6उसने जब दूर से यीशु को देखा, वह उसके पास दौड़ा आया और उसके सामने प्रणाम करता हुआ गिर पड़ा। 7और ऊँचे स्वर में पुकारते हुए बोला, "सबसे महान परमेश्वर के पुत्र, हे यीशु! तू मुझसे क्या चाहता है? तुझे परमेश्वर की शपथ, मेरी विनती है तू मुझे यातना मत दे।" 8क्योंकि यीशु उससे कह रहा था, " ओ दुष्टात्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।"

9तब यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

और उसने उसे बताया, "मेरा नाम लीजन अर्थात् सेना

है क्योंकि हम बहुत से हैं।" 10उसने यीशु से बार बार विनती की कि वह उन्हें उस क्षेत्र से न निकाले।

11वहीं पहाड़ी पर उस समय सुअरों का एक बड़ा सा रेवड़ चर रहा था। 12दुष्टात्माओं ने उससे विनती की, "हमें उन सुअरों में भेज दो ताकि हम उन में समा जायें।" 13और उसने उन्हें अनुमति दे दी। फिर दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से निकल कर सुअरों में समा गयीं, और वह रेवड़, जिसमें कोई दो हज़ार सुअर थे, ढलवाँ किनारे से नीचे की तरफ लुढ़कते-पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। और फिर वहीं डूब मरा।

14फिर रेवड़ के रखवालों ने जो भाग खड़े हुए थे, शहर और गाँव में जा कर यह समाचार सुनाया। तब जो कुछ हुआ था, उसे देखने लोग वहाँ आये। 15वे यीशु के पास पहुँचे और देखा कि वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, कपड़े पहने पूरी तरह सचेत वहाँ बैठा है; और यह वही था जिस में दुष्टात्माओं की पूरी सेना समाई थी, वे डर गये। 16जिन्होंने वह घटना देखी थी, लोगों को उसका ब्योरा देते हुए बताया कि जिसमें दुष्टात्माएँ समाई थीं, उसके साथ और सुअरों के साथ क्या बीती। 17तब लोग उससे विनती करने लगे कि वह उनके यहाँ से चला जाये।

18और फिर जब यीशु नाव पर चढ़ रहा था तभी जिस व्यक्ति में दुष्टात्माएँ थीं, यीशु से विनती करने लगा कि वह उसे भी अपने साथ ले ले।

19किन्तु यीशु ने उसे अपने साथ चलने की अनुमति नही दी। और उससे कहा, "अपने ही लोगों के बीच घर चला जा और उन्हें वह सब बता जो प्रभु ने तेरे लिये किया है। और उन्हें यह भी बता कि प्रभु ने दया कैसे की।" 20फिर वह चला गया और दिकपुलिस के लोगों को बताने लगा कि यीशु ने उसके लिये कितना बड़ा काम किया है। इससे सभी लोग चकित हुए।

एक मृत लड़की और रोगी स्त्री

21यीशु जब फिर परले पार गया तो उसके चारों तरफ एक बड़ी भीड़ जमा हो गयी। वह झील के किनारे था। तभी 22यहूदी धर्मसभा भवन का एक अधिकारी जिसका नाम याईर था वहाँ आया और जब उसने यीशु को देखा तो वह उसके पैरों पर गिर कर 23आग्रह के साथ विनती करता हुआ बोला, "मेरी नन्ही सी बच्ची मरने को पड़ी है, मेरी विनती है कि तू मेरे साथ चल और अपना हाथ उसके सिर पर रख जिससे वह अच्छी हो कर जीवित रहे।"

24तब यीशु उसके साथ चल पड़ा और एक बड़ी भीड़ भी उसके साथ हो ली। जिससे वह दबा जा रहा था।

25वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह बरस से लगातार खून जा रहा था। 26वह अनेक चिकित्सकों से इलाज कराते कराते बहुत दुःखी हो चुकी थी। उसके पास जो कुछ था, सब खर्च कर चुकी थी, पर उसकी हालत में कोई भी सुधार नहीं आ रहा था, बल्कि और बिगड़ती जा रही थी। 27जब उसने यीशु के बारे में सुना तो वह भीड़ में उसके पीछे आयी और उसका वस्त्र छू लिया। 28वह मन ही मन कह रही थी, "यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ तो ठीक हो जाऊँगी।" 29और फिर जहाँ से खून जा रहा था, वह स्त्रोत तुरंत ही सूख गया। उसे अपने शरीर में ऐसी अनुभूति हुई जैसे उसका रोग अच्छा हो गया हो। 30यीशु ने भी तत्काल अनुभव किया जैसे उसकी शक्ति उसमें से बाहर निकली हो। वह भीड़ में पीछे मुड़ा और पूछा, "मेरे वस्त्र किसने छुए?"

31तब उसके शिष्यों ने उससे कहा, "तू देख रहा है भीड़ तुझे चारों तरफ़ से दबाये जा रही है और तू पूछता है 'मुझे किसने छुआ?'"

32किन्तु वह चारों तरफ देखता ही रहा कि ऐसा किसने किया। 33फिर वह स्त्री, यह जानते हुए कि उसको क्या हुआ है, भय से काँपती हुई सामने आई और उसके चरणों पर गिर कर सब सच सच कह डाला। 34फिर यीशु ने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है। चैन से जा और अपनी बीमारी से बची रह।"

35वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर से कुछ लोग आये और उससे बोले, "तेरी बेटी मर गयी। अब तू गुरु को नाहक कष्ट क्यों देता है?"

36किन्तु यीशु ने, उन्होंने जो कहा था सुना और यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी से वह बोला, "डर मत, बस विश्वास कर।"

37फिर वह सब को छोड़, केवल पतरस, याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना को साथ लेकर 38यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर गया। उसने देखा कि वहाँ खलबली मची है; और लोग ऊँचे स्वर में रोते हुए विलाप

कर रहे हैं। 39वह भीतर गया और उनसे बोला, "यह रोना बिलखना क्यों है? बच्ची मरी नहीं है; वह सो रही है।" 40इस पर उन्होंने उसकी हँसी उड़ाई। फिर उसने सब लोगों को बाहर भेज दिया और बच्ची के पिता, माता और जो उसके साथ थे, केवल उन्हें साथ रखा। 41उसने बच्ची का हाथ पकड़ा और कहा, "तलीता, कूमी!" (अर्थात् "छोटी बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ी हो जा!") 42फिर छोटी बच्ची तत्काल खड़ी हो गयी और इधर उधर चलने फिरने लगी। (वह लड़की बारह साल की थी)। लोग तुरन्त आश्चर्य से भर उठे। 43यीशु ने उन्हें बड़े आदेश दिये कि किसी को भी इसके बारे में पता न चले। फिर उसने उन लोगों से कहा कि वे उस बच्ची को खाने को कुछ दें।

यीशु का अपने नगर जाना

6 फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर अपने नगर को चल दिया। उसके शिष्य भी उसके साथ थे। 2जब सब्त का दिन आया, उसने प्रार्थना सभागार में उपदेश देना आरम्भ किया। उसे सुनकर बहुत से लोग आश्चर्यचकित हुए। वे बोले, "इसको ये बातें कहाँ से मिली हैं? यह कैसी बुद्धिमानी है जो इसको दी गयी है? यह ऐसे आश्चर्य कर्म कैसे करता है? 3क्या यह वही बढ़ई नहीं है जो मरियम का बेटा है, और क्या यह याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई नही है? क्या ये जो हमारे साथ रहती हैं इसकी बहनें नही हैं?" सो उन्हें उसे स्वीकार करने में समस्या हो रही थी।

4यीशु ने तब उनसे कहा, "किसी नबी का अपने निजी देश, संबंधियों और परिवार को छोड़ और कहीं अनादर नहीं होता।" 5वहाँ वह कोई आश्चर्य कर्म भी नहीं कर सकता। सिवाय इसके कि वह कुछ रोगियों पर हाथ रख कर उन्हें चंगा कर दे। 6यीशु को उनके अविश्वास पर बहुत अचरज हुआ।

फिर वह गाँवों में लोगों को उपदेश देता घूमने लगा। 7उसने सभी बारह शिष्यों को अपने पास बुलाया। और दो दो कर के वह उन्हें बाहर भेजने लगा। उसने उन्हें दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया। 8और यह निर्देश दिया, "आप अपनी यात्रा के लिए लाठी के सिवा साथ कुछ न लें। न रोटी, न बिस्तर, न पटुके में पैसे। 9आप चप्पल तो पहन सकते है किन्तु कोई अतिरिक्त कुर्ती नहीं। 10जिस किसी घर में तुम जाओ, वहाँ उस समय तक ठहरो जब तक उस नगर को छोड़ो। 11और यदि किसी स्थान पर तुम्हारा स्वागत न हो और वहाँ के लोग तुम्हें न सुनें, तो उसे छोड़ दो। और उनके विरोध में साक्षी देने के लिये अपने पैरों से वहाँ की धूल झाड़ दो।"

12फिर वे वहाँ से चले गये। और उन्होंने उपदेश दिया कि लोगों, मन फिराओ! 13उन्होनें बहुत सी दुष्टात्माओं को बाहर निकाला और बहुत से रोगियों को जैतून के तेल से अभिषेक करते हुए चंगा किया।

हेरोदेस का विचार: यीशु यहून्ना है

14राजा हेरोदेस* ने इस बारे में सुना; क्योंकि यीशु का यश सब कहीं फैल चुका था। कुछ लोग कह रहे थे, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है और इसीलिये उसमें अद्‌भुत शक्तियाँ काम कर रही हैं।"

15दूसरे कह रहे थे, "वह एलिय्याह* है।"

कुछ और कह रहे थे, "यह नबी है या प्राचीन काल के नबियों जैसा कोई एक।"

16पर जब हेरोदेस ने यह सुना तो वह बोला, "यूहन्ना जिसका सिर मैंने कटवाया था, वही जी उठा है!"

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की हत्या

17क्योंकि हेरोदेस ने स्वयं ही यूहन्ना को बंदी बनाने और जेल में डालने की आज्ञा दी थी। उसने अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदियास के कारण, जिससे उसने विवाह कर लिया था, ऐसा किया। 18क्योंकि यूहन्ना हेरोदेस से कहा करता था कि यह उचित नहीं है कि तुमने अपने भाई की पत्नी से विवाह कर लिया है। 19इस पर हेरोदियास उससे बैर रखने लगी थी। वह चाहती थी कि उसे मार डाला जाये पर मार नहीं पाती थी। 20क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना से डरता था। हेरोदेस जानता था कि यूहन्ना एक सच्चा और पवित्र पुरुष है, इसीलिये वह इसकी रक्षा करता था। हेरोदेस जब यूहन्ना की बातें सुनता था तो वह बहुत घबराता था, फिर भी उसे उसकी बातें सुनना बहुत भाता था।

हेरोदेस अर्थात् हेरोद अंतिपस, गलील और पेरि का राजा तथा हेरोद महान का पुत्र।

एलिय्याह एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह से सैंकड़ों साल पहले हुआ था और परमेश्वर के बारे में लोगों को बताता था।

21संयोग से फिर वह समय आया जब हेरोदेस ने ऊँचे
अधिकारियों, सेना के नायकों और गलील के बड़े लोगों
को अपने जन्म दिन पर एक जेवनार दी। 22हेरोदियास
की बेटी ने भीतर आकर जो नृत्य किया, उससे उसने
जेवनार में आये मेहमानों और हेरोदेस को बहुत प्रसन्न
किया।

इस पर राजा हेरोदेस ने लड़की से कहा, "माँग, जो
कुछ तुझे चाहिये। मैं तुझे दूँगा।" 23फिर उसने उससे
शपथपूर्वक कहा, "मेरे आधे राज्य तक जो कुछ तू माँगेगी,
मैं तुझे दूँगा।"

24इस पर वह बाहर निकल कर अपनी माँ के पास
आई और उससे पूछा, "मुझे क्या माँगना चाहिये?"

फिर माँ ने बताया, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का
सिर।"

25तब वह तत्काल दौड़ कर राजा के पास भीतर आयी
और कहा, "मैं चाहती हूँ कि तू मुझे बपतिस्मा देने वाले
यूहन्ना का सिर तुरन्त थाली में रख कर दे।"

26इस पर राजा बहुत दुखी हुआ, पर अपनी शपथ और
अपनी जेवनार के मेहमानों के कारण वह उस लड़की
को मना करना नहीं चाहता था। 27इसलिये राजा ने उसका
सिर ले आने की आज्ञा देकर तुरंत एक जल्लाद भेज
दिया। फिर उसने जेल में जाकर उसका सिर काट कर
28और उसे थाली में रख कर उस लड़की को दिया। और
लड़की ने उसे अपनी माँ को दे दिया। 29जब यूहन्ना के
शिष्यों ने इस विषय में सुना तो वे आकर उसका शव ले
गये और उसे एक कब्र में रख दिया।

यीशु का पाँच हज़ार से अधिक को भोजन कराना

30फिर दिव्य संदेश का प्रचार करने वाले प्रेरितों ने
यीशु के पास इकट्ठे होकर जो कुछ उन्होंने किया था
और सिखाया था, सब उसे बताया। 31फिर यीशु ने उनसे
कहा, "तुम लोग मेरे साथ किसी एकांत स्थान पर चलो
और थोड़ा आराम करो" क्योंकि वहाँ बहुत लोगों का
आना जाना लगा हुआ था और उन्हें खाने तक का मौका
नहीं मिल पाता था। 32इसलिये वे अकेले ही एक नाव में
बैठ कर किसी एकांत स्थान को चले गये। 33बहुत से
लोगों ने उन्हें जाते देखा और पहचान लिया कि वे कौन
थे। इसलिये वे सारे नगरों से धरती के रास्ते चल पड़े और
उनसे पहले ही वहाँ जा पहुँचे। 34जब यीशु नाव से बाहर
निकला तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। वह उनके लिए
बहुत दुखी हुआ क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों जैसे थे।
सो वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।

35तब तक बहुत शाम हो चुकी थी। इसलिये उसके
शिष्य उसके पास आये और बोले, "यह एक सुनसान जगह
है और शाम भी बहुत हो चुकी है। 36लोगों को आसपास
के गाँवों और बस्तियों में जाने दो ताकि वे अपने लिए कुछ
खाने को मोल ले सकें।"

37किन्तु उसने उत्तर दिया, "उन्हें खाने को तुम दो।"

तब उन्होंने उससे कहा, "क्या हम जायें और दो सौ
दीनार की रोटियाँ मोल ले कर उन्हें खाने को दें?"

38उसने उनसे कहा, "जाओ और देखो, तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं?"

पता करके उन्होंने कहा, "हमारे पास पाँच रोटियाँ
और दो मछलियाँ हैं।"

39फिर उसने आज्ञा दी, "हरी घास पर सब को पंगत
में बैठा दो।" 40तब वे सौ-सौ और पचास-पचास की
पंगतों में बैठ गये। 41और उसने वे पाँच रोटियाँ और दो
मछलियाँ उठा कर स्वर्ग की ओर देखते हुए धन्यवाद दिया
और 'रोटियाँ तोड़ कर लोगों को परोसने के लिए, अपने
शिष्यों को दीं। और उसने उन दो मछलियों को भी उन
सब लोगों में बाँट दिया। 42सब ने छक कर खाया और
तृप्त हुए। 43और फिर उन्होंने बची हुई रोटियों और
मछलियों से भर कर, बारह टोकरियाँ उठाई। 44जिन लोगों
ने रोटियाँ खाई, उनमे केवल पुरुषों की ही संख्या पाँच
हज़ार थी।

यीशु का पानी पर चलना

45फिर उसने अपने चेलों को तुरंत नाव पर चढ़ाया
ताकि जब तक वह भीड़ को बिदा करे, वे उससे पहले
ही परले पार बैतसैदा चले जायें। 46उन्हें विदा करके,
प्रार्थना करने के लिये, वह पहाड़ी पर चला गया। 47और
जब शाम हुई तो नाव झील के बीचों-बीच थी और वह
अकेला धरती पर था। 48उसने देखा कि उन्हें नाव खेना
भारी पड़ रहा था। क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी। लगभग
रात के चौथे पहर वह झील पर चलते हुए उनके पास
आया। वह उनके पास से निकलने को ही था। 49उन्होंने
उसे झील पर चलते देख सोचा कि वह कोई भूत है। और
उनकी चीख निकल गयी 50क्योंकि सभी ने उसे देखा था

और वे सहम गये थे। तुरंत उसने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "साहस रखो, यह मैं हूँ! डरो मत!" 51फिर वह उनके साथ नाव पर चढ़ गया और हवा थम गयी। इससे वे बहुत चकित हुए। 52वे रोटियों के आश्चर्य कर्म के विषय में समझ नहीं पाये थे। उनकी बुद्धि जड़ हो गयी थी।

53झील पार करके वे गन्नेसरत पहुँचे। उन्होंने नाव बाँध दी। 54जब वे नाव से उतर कर बाहर आये तो लोग यीशु को पहचान गये। 55फिर वे बीमारों को खाटों पर डाले समूचे क्षेत्र में जहाँ कहीं भी, उन्होंने सुना कि वह है, उन्हें लिये दौड़ते फिरे। 56वह गावों में, नगरों में या बस्तियों में, जहाँ कहीं भी जाता, लोग अपने बीमारों को बाज़ारों में रख देते और उससे विनती करते कि वह अपने वस्त्र का बस कोई सिरा ही उन्हें छू लेने दे। और जो भी उसे छू पाये, सब चंगे हो गये।

मनुष्य के नियमों से परमेश्वर का विधान महान है

7 तब फरीसी और कुछ धर्मशास्त्री जो यरुशलेम से आये थे, यीशु के आसपास एकत्र हुए। 2उन्होंने देखा कि उसके कुछ शिष्य बिना हाथ धोये भोजन कर रहे हैं। 3क्योंकि अपने पुरखों की रीति पर चलते हुए फरीसी और दूसरे यहूदी जब तक सावधानी के साथ पूरी तरह अपने हाथ नहीं धो लेते भोजन नहीं करते। 4ऐसे ही बाज़ार से लाये खाने को वे बिना धोये नहीं खाते। ऐसी ही और भी अनेक रूढ़ियाँ है, जिनका वे पालन करते हैं। जैसे कटोरों, कलसों, ताँबे के बर्तनों को माँजना, धोना आदि।

5इसलिये फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने यीशु से पूछा–"तुम्हारे शिष्य पुरखों की परम्परा का पालन क्यों नहीं करते? बल्कि अपना खाना बिना हाथ धोये ही खा लेते हैं।"

6यीशु ने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम जैसे कपटियों के बारे में ठीक ही भविष्यवाणी की थी। जैसा कि लिखा है:

'ये मेरा आदर केवल होठों से करते हैं,
पर इनके मन मुझसे सदा दूर हैं।
7 मुझको इनकी उपासना अर्पित है बिना काम की;
और ये मेरी व्यर्थ उपासना करते हैं।
क्योंकि ये लोगों को मनुज के बनाये सिद्धान्त
और नियम कह करके सिखाते हैं।'

यशायाह 29:13

8तुमने परमेश्वर का आदेश उठाकर एक तरफ रख दिया है और तुम मनुष्यों की परम्परा का सहारा ले रहे हो।"

9उसने उनसे कहा: "तुम परमेश्वर के आदेशों को टालने में बहुत चतुर हो गये हो ताकि तुम अपनी रूढ़ियों की स्थापना कर सको! 10उदाहरण के लिये मूसा ने कहा, 'अपने माता–पिता का आदर कर' और 'जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, उसे निश्चय ही मार डाला जाये।' 11पर तुम कहते हो कि यदि कोई व्यक्ति अपने माता–पिता से कहता है कि मेरी जिस किसी वस्तु से तुम्हें लाभ पहुँच सकता था, मैंने परमेश्वर को समर्पित कर दी है।' 12तो तुम उसके माता–पिता के लिये कुछ भी करना समाप्त कर देने की अनुमति देते हो। 13इस तरह तुम अपने बनाये रीति–रिवाजों से परमेश्वर के वचन को टाल देते हो। ऐसी ही और भी बहुत सी बातें तुम लोग करते हो।"

14यीशु ने भीड़ को फिर अपने पास बुलाया और कहा, "हर कोई मेरी बात सुने और समझे। 15ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो बाहर से मनुष्य के भीतर जा कर उसे अशुद्ध करे, बल्कि जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध कर सकती हैं।" 16[यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।]*

17फिर जब भीड़ को छोड़ कर वह घर के भीतर गया तो उसके शिष्यों ने उससे इस दृष्टान्त के बारे में पूछा। 18तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम भी कुछ नही समझे? क्या तुम नहीं देखते कि कोई भी वस्तु जो किसी व्यक्ति में बाहर से भीतर जाती है, वह उसे दूषित नहीं कर सकती 19क्योंकि वह उसके हृदय में नहीं, पेट में जाती है और फिर पखाने से होकर बाहर निकल जाती है।" (ऐसा कहकर उसने खाने की सभी वस्तुओं को शुद्ध कहा।)

20फिर उसने कहा, "मनुष्य के भीतर से जो निकलता है, वही उसे अशुद्ध बनाता है 21क्योंकि मनुष्य के हृदय के भीतर से ही बुरे विचार और अनैतिक कार्य, चोरी, हत्या, 22व्यभिचार, लालच, दुष्टता, छल–कपट, अभद्रता, ईर्ष्या, चुगलखोरी, अहंकार और मूर्खता बाहर आते हैं।

पद 16 "कुछ यूनानी प्रतियों में पद 16 जोड़ा गया है।"

23ये सब बुरी बातें भीतर से आती हैं और व्यक्ति को अशुद्ध
बना देती हैं।"

गैर यहूदी महिला को सहायता

24फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और सूर के
आस-पास के प्रदेश को चल पड़ा। वहाँ वह एक घर में
गया। वह नहीं चाहता था कि किसी को भी उसके आने
का पता चले। किन्तु वह अपनी उपस्थिति को छुपा नहीं
सका। 25वास्तव में एक स्त्री जिसकी लड़की में दुष्ट आत्मा
का निवास था, यीशु के बारे में सुन कर तत्काल उसके
पास आयी और उसके पैरों में गिर पड़ी। 26यह स्त्री यूनानी
थी और सीरिया के फिनीकी में पैदा हुई थी। उसने अपनी
बेटी में से दुष्टात्मा को निकालने के लिये यीशु से प्रार्थना
की।

27यीशु ने उससे कहा, "पहले बच्चों को तृप्त हो लेने दे
क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर उसे कुत्तों के आगे फेंक
देना ठीक नहीं है।"

28स्त्री ने उससे उत्तर में कहा, "प्रभु, कुत्ते भी तो मेज़
के नीचे बच्चों के खाते समय गिरे चूरचार को खा लेते हैं।"

29फिर यीशु ने उससे कहा, "इस उत्तर के कारण, तू
चैन से अपने घर जा सकती है। दुष्टात्मा तेरी बेटी को
छोड़ बाहर जा चुकी है।"

30सो वह घर चल दी और अपनी बच्ची को खाट पर
सोते पाया। तब तक दुष्टात्मा उससे निकल चुकी थी।

बहरा गूँगा सुनने-बोलने लगा

31फिर वह सूर के इलाके से वापस आ गया और
दिकपुलिस यानी दस-नगर के रास्ते सिदोन होता हुआ
झील गलील पहुँचा। 32वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक
व्यक्ति को लाये जो बहरा था और ठीक से बोल भी नहीं
पाता था। लोगों ने यीशु से प्रार्थना की कि वह उस पर
अपना हाथ रख दे।

33यीशु उसे भीड़ से दूर एक तरफ़ ले गया। यीशु ने
अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और फिर उसने
थूका और उस व्यक्ति की जीभ छुई। 34फिर स्वर्ग की
ओर ऊपर देख कर गहरी साँस भरते हुए उससे कहा,
"इप्फ्तह!" (अर्थात् "खुल जा!") 35और उसके कान खुल
गए, और उसकी जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह
साफ साफ बोलने लगा।

36फिर यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे किसी को कुछ न
बतायें। पर उसने लोगों को जितना रोकना चाहा, उन्होंने
उसे उतना ही अधिक फैलाया। 37लोग आश्चर्यचकित
होकर कहने लगे, "यीशु जो करता है, भला करता है।
यहाँ तक कि वह बहरों को सुनने की शक्ति और गूँगों को
बोली देता है।"

चार हज़ार को भोजन

8 उन्हीं दिनों एक दूसरे अवसर पर एक बड़ी भीड़
इकट्ठी हुई। उनके पास खाने को कुछ नहीं था।
यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और उनसे कहा,
2"मुझे इन लोगों पर तरस आ रहा है क्योंकि इन लोगों
को मेरे साथ तीन दिन हो चुके हैं और उनके पास खाने
को कुछ नहीं है। 3और यदि मैं इन्हें भूखा ही घर भेज देता
हूँ तो वे मार्ग में ही ढेर हो जायेंगे। कुछ तो बहुत दूर से आये
हैं।"

4उसके शिष्यों ने उत्तर दिया, "इस जंगल में इन्हें खिलाने
के लिये किसी को पर्याप्त भोजन कहाँ से मिल सकता
है?"

5फिर यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?" "सात", उन्होंने उत्तर दिया।

6फिर उसने भीड़ को धरती पर नीचे बैठ जाने की
आज्ञा दी। और उसने वे सात रोटियाँ लीं, धन्यवाद किया
और उन्हें तोड़ कर बाँटने के लिये अपने शिष्यों को दिया।
और फिर उन्होंने भीड़ के लोगों में बाँट दिया। 7उनके
पास कुछ थोड़ी मछलियाँ भी थीं, उसने धन्यवाद करके
उन्हें भी बाँट देने को कहा। 8लोगों ने भर पेट भोजन
किया। और फिर उन्होंने बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा
करके सात टोकरियाँ भरीं। 9वहाँ कोई चार हज़ार पुरुष
रहे होंगे। फिर यीशु ने उन्हें विदा किया 10और वह तत्काल
अपने शिष्यों के साथ नाव में बैठ कर दलमनूता प्रदेश को
चला गया।

फ़रीसियों की चाहत : यीशु कुछ अनुचित करे

11फिर फरीसी आये और उससे प्रश्न करने लगे,
उन्होंने उससे कोई स्वर्गीय आश्चर्य चिह्न प्रकट करने को
कहा। उन्होंने यह उसकी परीक्षा लेने के लिये कहा था।
12तब अपने मन में गहरी आह भरते हुए यीशु ने कहा,
"इस पीढ़ी के लोग कोई आश्चर्य-चिन्ह क्यों चाहते हैं?

इन्हें कोई चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" 13फिर वह उन्हें छोड़ कर वापस नाव में आ गया और झील के परले पार चला गया।

यहूदी नेताओं के विरुद्ध यीशु की चेतावनी

14यीशु के शिष्य कुछ खाने को लाना भूल गये थे। एक रोटी के सिवाय उनके पास और कुछ नहीं था। 15यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "सावधान! फरीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से बचे रहो।"

16"हमारे पास रोटी नहीं हैं," इस पर, वे आपस में सोच विचार करने लगे।

17वे क्या कह रहे हैं, यह जानकर यीशु उनसे बोला, "रोटी पास नहीं होने के विषय में तुम क्यों सोच विचार कर रहे हो? क्या तुम अभी भी नहीं समझते बूझते? क्या तुम्हारी बुद्धि इतनी जड़ हो गयी है? 18तुम्हारी आँखें हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? क्या तुम्हें याद नहीं? 19जब मैंने पाँच हज़ार लोगों के लिये पाँच रोटियों के टुकड़े किये थे और तुमने उन्हें कितनी टोकरियों में बटोरा था?"

"बारह", उन्होंने कहा।

20"और जब मैंने चार हज़ार के लिये सात रोटियों के टुकड़े किये थे तो तुमने कितनी टोकरियाँ भर कर उठाई थीं?"

"सात", उन्होंने कहा।

21फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब भी नहीं समझे?"

अंधे को आँखें

22फिर वे बैतसैदा चले आये। वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक अंधे को लाये और उससे प्रार्थना की कि वह उसे छू दे। 23उसने अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे गाँव के बाहर ले गया। उसने उसकी आँखों पर थूका, अपने हाथ उस पर रखे और उससे पूछा, "तुझे कुछ दीखता है?"

24ऊपर देखते हुए उसने कहा, "मुझे लोग दीख रहे हैं। वे आसपास चलते पेड़ों जैसे लग रहे हैं।"

25तब यीशु ने उसकी आँखों पर जैसे ही फिर अपने हाथ रखे, उसने अपनी आँखें पूरी खोल दीं। उसे ज्योति मिल गयी थी। वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख रहा था। 26फिर यीशु ने उसे घर भेज दिया और कहा, "वह गाँव में न जाये।"

पतरस का कथन: यीशु मसीह है

27और फिर यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिप्पी के आसपास के गाँवों को चल दिये। रास्ते में यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"

28उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना पर कुछ लोग एलिय्याह और दूसरे तुझे भविष्यवक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।"

29फिर यीशु ने उनसे पूछा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?"

पतरस ने उसे उत्तर दिया, "तू मसीह है।"

30फिर उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में यह किसी से न कहें।

31और उसने उन्हें समझाना शुरू किया, "मनुष्य के पुत्र को बहुत सी यातनाएँ उठानी होंगी और बुज़ुर्ग प्रमुख याजक तथा धर्म शास्त्रियों द्वारा वह नकारा जायेगा और निश्चय ही वह मार दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन वह मरे हुओं में से जी उठेगा।" 32उसने उनको यह साफ़ साफ़ बता दिया। फिर पतरस उसे एक तरफ़ ले गया और झिड़कने लगा। 33किन्तु यीशु ने पीछे मुड़कर अपने शिष्यों पर दृष्टि डाली और पतरस को फटकारते हुए बोला, "शैतान, मुझसे दूर हो जा! तू परमेश्वर की बातों से सरोकार नहीं रखता, बल्कि मनुष्य की बातों से सरोकार रखता है।"

34फिर अपने शिष्यों के साथ भीड़ को उसने अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह अपना सब कुछ त्याग करे और अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले। 35क्योंकि जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता है, उसे इसे खोना होगा। और जो कोई मेरे लिये और सुसमाचार के लिये अपना जीवन देगा, उसका जीवन बचेगा। 36यदि कोई व्यक्ति अपनी आत्मा खोकर सारे जगत् को भी पा लेता है, तो उसका क्या लाभ? 37क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी वस्तु के बदले में जीवन नही पा सकता। 38यदि कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मेरे नाम और वचन के कारण लजाता है तो मनुष्य का पुत्र भी जब पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने

परम पिता की महिमा सहित आयेगा, तो वह भी उसके लिए लजायेगा।"

9 और फिर उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं जो परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया देखने से पहले मृत्यु का अनुभव नहीं करेंगे।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन देना

2छ: दिन बाद यीशु केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लेकर, एक ऊँचे पहाड़ पर गया। वहाँ उनके सामने उसने अपना रूप बदल दिया। 3उस के वस्त्र चमचमा रहे थे। एकदम उजले सफेद! धरती पर कोई भी धोबी जितना उजला नहीं धो सकता, उससे भी अधिक उजले सफेद। 4एलिय्याह और मूसा भी उसके साथ प्रकट हुए। वे यीशु से बात कर रहे थे।

5तब पतरस बोल उठा और उसने यीशु से कहा, "हे रब्बी, यह बहुत अच्छा हुआ कि हम यहाँ हैं। हमें तीन मण्डप बनाने दे–एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" 6पतरस ने यह इसलिये कहा कि वह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कहे। वे बहुत डर गये थे।

7तभी एक बादल आया और उन पर छा गया। बादल में से यह कहते एक वाणी निकली–"यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी सुनो!"

8और तत्काल उन्होंने जब चारों ओर देखा तो यीशु को छोड़ कर अपने साथ किसी और को नहीं पाया।

9जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि उन्होंने जो कुछ देखा है, उसे वे तब तक किसी को न बतायें जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे।

10सो उन्होंने इस बात को अपने भीतर ही रखा। किन्तु वे सोच विचार कर रहे थे कि "मर कर जी उठने" का क्या अर्थ है? 11फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "धर्मशास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?"

12यीशु ने उनसे कहा, "हाँ, सब बातों को ठीक से व्यवस्थित करने के लिए निश्चय ही एलिय्याह पहले आयेगा। किन्तु मनुष्य के पुत्र के बारे में यह क्यों लिखा गया है कि उसे बहुत सी यातनाएँ झेलनी होंगी और उसे घृणा के साथ नकारा जायेगा? 13मैं तुम्हें बताता हूँ, एलिय्याह आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो कुछ चाहा, किया। ठीक वैसा ही जैसा उसके विषय में लिखा हुआ है।"

बीमार लड़के को चंगा करना

14जब वे दूसरे शिष्यों के पास आये तो उन्होंने उनके आसपास जमा एक बड़ी भीड़ देखी। उन्होंने देखा कि उनके साथ धर्मशास्त्री विवाद कर रहे हैं। 15और जैसे ही सब लोगों ने यीशु को देखा, वे चकित हुए। और स्वागत करने उसकी तरफ़ दौड़े।

16फिर उसने उनसे पूछा, "तुम उनसे किस बात पर विवाद कर रहे हो?"

17भीड़ में से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं अपने बेटे को तेरे पास लाया था। उस पर एक दुष्टात्मा सवार है, जो उसे बोलने नहीं देती। 18जब कभी वह दुष्टात्मा इस पर आती है, इसे नीचे पटक देती है और इसके मुँह से झाग निकलने लगते हैं और यह दाँत पीसने लगता है और अकड़ जाता है। मैंने तेरे शिष्यों से इस दुष्ट आत्मा को बाहर निकालने की प्रार्थना की किन्तु वे उसे नहीं निकाल सके।"

19फिर यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "ओ अविश्वासी लोगो, मैं तुम्हारे साथ कब तक रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? लड़के को मेरे पास ले आओ!"

20तब वे लड़के को उसके पास ले आये और जब दुष्टात्मा ने यीशु को देखा तो उसने तत्काल लड़के को मरोड़ दिया। वह धरती पर जा पड़ा और चक्कर खा गया। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे।

21तब यीशु ने उसके पिता से पूछा, "यह ऐसा कितने दिनों से है?"

पिता ने उत्तर दिया, "यह बचपन से ही ऐसा है। 22दुष्टात्मा इसे मार डालने के लिए कभी आग में गिरा देती है तो कभी पानी में। क्या तू कुछ कर सकता है? हम पर दया कर, हमारी सहायता कर।"

23यीशु ने उससे कहा, "तूने कहा, 'क्या तू कुछ कर सकता है?' विश्वासी व्यक्ति के लिए सब कुछ सम्भव है।"

24तुरंत बच्चे का पिता चिल्लाया और बोला, "मैं विश्वास करता हूँ। मेरे अविश्वास को हटा!"

25यीशु ने जब देखा कि भीड़ उन पर चढ़ी चली आ
रही है, उसने दुष्टात्मा को ललकारा और उससे कहा,
"ओ बच्चे को बहरा गूँगा कर देने वाली दुष्टात्मा, मैं तुझे
आज्ञा देता हूँ इसमें से बाहर निकल आ और फिर इसमें
दुबारा प्रवेश मत कर!"
26तब दुष्टात्मा चिल्लाई। बच्चे पर भयानक दौरा पड़ा।
और वह बाहर निकल गयी। बच्चा मरा हुआ सा दिखने
लगा, बहुत लोगों ने कहा, "वह मर गया!" 27फिर यीशु ने
लड़के को हाथ से पकड़ कर उठाया और खड़ा किया।
वह खड़ा हो गया।
28इसके बाद यीशु अपने घर चला गया। अकेले में
उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "हम इस दुष्टात्मा को बाहर
क्यों नहीं निकाल सके?"
29इस पर यीशु ने उनसे कहा, "ऐसी दुष्टात्मा प्रार्थना
के बिना बाहर नहीं निकाली जा सकती थी।"

अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु का कथन

30फिर उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया। और जब वे गलील
होते हुए जा रहे थे तो वह नहीं चाहता था कि वे कहाँ हैं,
इसका किसी को भी पता चले। 31क्योंकि वह अपने शिष्यों
को शिक्षा दे रहा था। उसने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र
मनुष्य के ही हाथों धोखे से पकड़वाया जायेगा और वे उसे
मार डालेंगे। मारे जाने के तीन दिन बाद वह जी उठेगा।"
32पर वे इस बात को समझ नहीं सके और यीशु से इसे
पूछने में डरते थे।

सबसे बड़ा कौन है

33फिर वे कफ़रनहूम आये। यीशु जब घर में था, उसने
उनसे पूछा, "रास्ते में तुम किस बात पर सोच विचार कर
रहे थे?" 34पर वे चुप रहे। क्योंकि वे राह चलते आपस में
विचार कर रहे थे कि सबसे बड़ा कौन है।
35सो वह बैठ गया। उसने बारहों को अपने पास बुलाया
और उनसे कहा, "यदि कोई सबसे बड़ा बनना चाहता है
तो उसे निश्चय ही सबसे छोटा हो कर सब का सेवक
बनना होगा।"
36और फिर एक छोटे बच्चे को लेकर उसने उनके
सामने खड़ा किया। बच्चे को अपनी गोद में लेकर वह
उनसे बोला, 37"मेरे नाम में जो कोई इनमें से किसी भी
एक बच्चे को अपनाता है, वह मुझे अपना रहा है; और
जो कोई मुझे अपनाता है, न केवल मुझे अपना रहा है,
बल्कि उसे भी अपना रहा है, जिसने मुझे भेजा है।"

जो हमारा विरोधी नहीं है, हमारा है

38यूहन्ना ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हमने किसी को तेरे
नाम से दुष्टात्माएँ बाहर निकालते देखा है। हमने उसे रोकना
चाहा क्योंकि वह हममें से कोई नहीं था।"
39किन्तु यीशु ने कहा, "उसे रोको मत। क्योंकि जो
कोई मेरे नाम से आश्चर्य कर्म करता है, वह तुरंत बाद
मेरे लिए बुरी बातें नहीं कह पायेगा। 40वह जो हमारे
विरोध में नहीं है, हमारे पक्ष में है। 41जो इसलिये तुम्हें
एक कटोरा पानी पिलाता है कि तुम मसीह के हो, मैं
तुम्हें सत्य कहता हूँ, उसे इसका प्रतिफल मिले बिना नहीं
रहेगा।
42"और जो कोई इन नन्हे अबोध बच्चों में से किसी
को, जो मुझमें विश्वास रखते हैं, पाप के मार्ग पर ले जाता
है, तो उसके लिये अच्छा है कि उसकी गर्दन में एक
चक्की का पाट बाँध कर उसे समुद्र में फेंक दिया जाये।
43यदि तेरा हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट डाल,
टुंडा हो कर जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा है बजाय
इसके कि दो हाथों वाला हो कर नरक में डाला जाये, जहाँ
की आग कभी नहीं बुझती। 44* 45यदि तेरा पैर तुझे
पाप की राह पर ले जाये उसे काट दे। लँगड़ा हो कर
जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा है, बजाय इसके कि
दो पैरों वाला हो कर नरक में डाला जाये। 46* 47यदि
तेरी आँख तुझ से पाप करवाए तो उसे निकाल दे। काना
होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कहीं अच्छा
है, बजाय इसके कि दो आँखों वाला हो कर नरक में
डाला जाये। 48जहाँ के कीड़े कभी नहीं मरते और जहाँ
की आग कभी बुझती नहीं। 49हर व्यक्ति को आग पर
नमकीन बनाया जायेगा।
50"नमक अच्छा है। किन्तु नमक यदि अपना
नमकीनपन ही छोड़ दे तो तुम उसे दुबारा नमकीन कैसे
बना सकते हो? अपने में नमक रखो और एक दूसरे के
साथ शांति से रहो।"

पद 44 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 44 जोड़ा गया है जो पद 48 के समान है।

पद 46 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 46 जोड़ा गया है जो पद 48 के समान है।

तलाक के बारे में यीशु की शिक्षा

10 फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार आ गया। भीड़ की भीड़ फिर उसके पास आने लगीं। और अपनी रीति के अनुसार वह उपदेश देने लगा।

2फिर कुछ फरीसी उसके पास आये और उससे पूछा, "क्या किसी पुरुष के लिये उचित है कि वह अपनी पत्नी को तलाक दे?" उन्होंने उसकी परीक्षा लेने के लिये उससे यह पूछा था।

3उसने उन्हें उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हें क्या नियम दिया है?"

4उन्होंने कहा, "मूसा ने किसी पुरुष को त्यागपत्र लिखकर पत्नी को त्यागने की अनुमति दी थी।"

5यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा इसलिए लिखी थी कि तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आ सकता। 6सृष्टि के प्रारम्भ से ही, 'परमेश्वर ने उन्हें पुरुष और स्त्री के रूप में रचा है।' 7 'इसीलिये एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा। 8और वे दोनों एक तन हो जायेंगे।' इसलिए वे दो नहीं रहते बल्कि एक तन हो जाते हैं। 9इसलिये जिसे परमेश्वर ने मिला दिया है, उसे मनुष्य को अलग नहीं करना चाहिए।"

10फिर वे जब घर लौटे तो शिष्यों ने यीशु से इस विषय में पूछा। 11उसने उनसे कहा, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक दे कर दूसरी स्त्री से ब्याह रचाता है, वह उस पत्नी के प्रति व्यभिचार करता है। 12और यदि वह स्त्री अपने पति का त्याग करके दूसरे पुरुष से ब्याह करती है तो वह व्यभिचार करती है।"

बच्चों को यीशु की आशीष

13फिर लोग यीशु के पास नन्हें-मुन्ने बच्चों को लाने लगे ताकि वह उन्हें छू कर आशीष दे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें झिड़क दिया। 14जब यीशु ने यह देखा तो उसे बहुत क्रोध आया। फिर उसने उनसे कहा, "नन्हे-मुन्ने बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। 15मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो कोई परमेश्वर के राज्य को एक छोटे बच्चे की तरह नहीं अपनायेगा, उसमें कभी प्रवेश नही करेगा।" 16फिर उन बच्चों को यीशु ने गोद में उठा लिया और उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीष दी।

यीशु से एक धनी व्यक्ति का प्रश्न

17यीशु जैसे ही अपनी यात्रा पर निकला, एक व्यक्ति उसकी ओर दौड़ा और उसके सामने झुक कर उसने पूछा, "उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

18यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर के सिवा और कोई उत्तम नहीं है। 19तू व्यवस्था की आज्ञाओं को जानता है: 'हत्या मत कर, व्यभिचार मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, छल मत कर, अपने माता-पिता का आदर कर...' *"

20उस व्यक्ति ने यीशु से कहा, "गुरु, मैं अपने लड़कपन से ही इन सब बातों पर चलता रहा हूँ।"

21यीशु ने उस पर दृष्टि डाली और उसके प्रति प्रेम का अनुभव किया। फिर उससे कहा, "तुझमें एक कमी है। जा, जो कुछ तेरे पास है, उसे बेच कर गरीबों में बाँट दे। स्वर्ग में तुझे धन का भंडार मिलेगा। फिर आ, और मेरे पीछे हो ले।"

22यीशु के ऐसा कहने पर वह व्यक्ति बहुत निराश हुआ और दुःखी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।

23यीशु ने चारों ओर देख कर अपने शिष्यों से कहा, "उन लोगों के लिये, जिनके पास धन है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!"

24उसके शब्दों पर उसके शिष्य अचरज में पड़ गये। पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मेरे बच्चों, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! 25परमेश्वर के राज्य में किसी धनी के प्रवेश कर पाने से, किसी ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना आसान है!"

26उन्हें और अधिक अचरज हुआ। वे आपस में कहने लगे, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"

27यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "यह मनुष्यों के लिये असम्भव है किन्तु परमेश्वर के लिये नहीं। क्योंकि परमेश्वर के लिये सब कुछ सम्भव है।"

28फिर पतरस उससे कहने लगा, "देख, हम सब कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं।"

29यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे लिये और सुसमाचार के लिये घर,

---

हत्या ... आदर कर देखें निर्गमन 20:12-16; व्यवस्था. 5:16-20

भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों, खेत, सब कुछ को छोड़ देगा। 30और जो इस युग में घरों, भाइयों, बहनों, माताओं, बच्चों और खेतों को सौ गुणा अधिक करके नहीं पायेगा–किन्तु यातना के साथ। और आने वाले युग में अनन्त जीवन। 31और बहुत से वे जो आज सबसे अन्तिम हैं, सबसे पहले हो जायेंगे, और बहुत से वे जो आज सबसे पहले हैं, सबसे अन्तिम हो जायेंगे।"

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

32फिर यरुशलेम जाते हुए जब वे मार्ग में थे तो यीशु उनसे आगे चल रहा था। वे डरे हुए थे और जो उनके पीछे चल रहे थे, वे भी डरे हुए थे। फिर यीशु बारहों शिष्यों को अलग ले गया और उन्हें बताने लगा कि उसके साथ क्या होने वाला है। 33 "सुनो, हम यरुशलेम जा रहे हैं। मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वा कर प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को सौंप दिया जायेगा। और वे उसे मृत्यु दण्ड दे कर ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे 34जो उसकी हँसी उड़ाएँगे और उस पर थूकेंगे। वे उसे कोड़े लगायेंगे और फिर मार डालेंगे। और फिर तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

याकूब और यूहन्ना का यीशु से आग्रह

35फिर जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना यीशु के पास आये और उससे बोले, "गुरु, हम चाहते हैं कि हम जो कुछ तुझ से माँगे, तू हमारे लिये वह कर।"

36यीशु ने उनसे कहा, "तुम मुझ से अपने लिये क्या करवाना चाहते हो?"

37फिर उन्होंने उससे कहा, "हमें अधिकार दे कि तेरी महिमा में हम तेरे साथ बैठें, हममें से एक तेरे दायें और दूसरा बायें।"

38यीशु ने उनसे कहा, "तुम नहीं जानते तुम क्या माँग रहे हो। जो कटोरा मैं पीने को हूँ, क्या तुम उसे पी सकते हो? या जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ, तुम उसे ले सकते हो?"

39उन्होंने उससे कहा, "हम वैसा कर सकते हैं!"

फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम वह प्याला पिओगे, जो मैं पीता हूँ? तुम वह बपतिस्मा लोगे, जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ? 40किन्तु मेरे दायें और बायें बैठने का स्थान देना मेरा अधिकार नहीं है। ये स्थान उन्हीं पुरुषों के लिए हैं जिनके लिये ये तैयार किये गये हैं।"

41जब बाकी के दस शिष्यों ने यह सुना तो वे याकूब और यूहन्ना पर क्रोधित हुए। 42फिर यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो ग़ैर यहूदियों के शासक माने जाते हैं, उनका और उनके महत्त्वपूर्ण नेताओं का उन पर प्रभुत्व है। 43पर तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है। तुममें से जो कोई बड़ा बनना चाहता है, वह तुम सब का दास बने। 44और जो तुम में प्रधान बनना चाहता है, वह सब का सेवक बने 45क्योंकि मनुष्य का पुत्र तक सेवा कराने नहीं आया है, बल्कि सेवा करने आया है। और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना जीवन देने आया है।"

अंधे को आँखें

46फिर वे यरीहो आये और जब यीशु अपने शिष्यों और एक बड़ी भीड़ के साथ यरीहो को छोड़ कर जा रहा था, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई नाम का एक अंधा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। 47जब उसने सुना कि वह नासरी यीशु है, तो उसने ऊँचे स्वर में पुकार पुकार कर कहना शुरू किया, "दाऊद के पुत्र यीशु, मुझ पर दया कर!"

48बहुत से लोगों ने डाँट कर उसे चुप रहने को कहा। पर वह और भी ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर!"

49तब यीशु रुका और बोला, "उसे मेरे पास लाओ।"

सो उन्होंने उस अंधे व्यक्ति को बुलाया और उससे कहा, "हिम्मत रख! खड़ा हो! वह तुझे बुला रहा है।" 50वह अपना कोट फेंक कर उछल पड़ा और यीशु के पास आया।

51फिर यीशु ने उससे कहा, "तू मुझ से अपने लिए क्या करवाना चाहता है?" अंधे ने उससे कहा, "हे रब्बी, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।"

52तब यीशु बोला, "जा, तेरे विश्वास से तेरा उद्धार हुआ।" फिर वह तुरंत देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया।

11 फिर जब व यरुशलेम के पास जैतून पर्वत पर बैतफगे और बैतनिय्याह पहुँचे तो यीशु ने अपने शिष्यों में से दो को 2यह कह कर सामने के गाँव में भेजा, "जाओ वहाँ जैसे ही तुम गाँव में प्रवेश करोगे एक गदही का बछेरा बँधा हुआ मिलेगा जिस पर पहले कभी कोई

नहीं चढ़ा। उसे खोल कर यहाँ ले आओ। 3और यदि कोई
तुमसे पूछे कि 'तुम यह क्यों कर रहे हो?' तो तुम कहना,
'प्रभु को इसकी आवश्यकता है। फिर वह इसे तुरंत ही
वापस लौटा देगा।' "

4तब वे वहाँ से चल पड़े और उन्होंने खुली गली में एक
द्वार के पास गदही के बछेरे को बँधा पाया। सो उन्होंने उसे
खोल लिया। 5कुछ व्यक्तियों ने, जो वहाँ खड़े थे, उनसे
पूछा, "इस गदही के बछेरे को खोल कर तुम क्या कर रहे
हो?" 6उन्होंने उनसे वही कहा जो यीशु ने बताया था। इस
पर उन्होंने उन्हें जाने दिया। 7फिर वे उस गदही के बछेरे
को यीशु के पास ले आये। उन्होंने उस पर अपने वस्त्र
डाल दिये। फिर यीशु उस पर बैठ गया। 8बहुत से लोगों ने
अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिये और बहुतों ने खेतों से
टहनियाँ काट कर वहाँ बिछा दीं। 9वे लोग जो आगे थे
और वे भी जो पीछे थे, पुकार रहे थे,

"होशन्ना!
वह धन्य है जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!
10 धन्य है हमारे पिता दाऊद का राज्य
जो आ रहा है।
होशन्ना स्वर्ग में!"

भजन संहिता 118:25,26

11फिर उसने यरुशलेम में प्रवेश किया और मन्दिर में
गया। उसने चारों ओर की हर वस्तु को देखा क्योंकि
शाम को बहुत देर हो चुकी थी, वह बारहों शिष्यों के साथ
बैतनिय्याह को चला गया।

12अगले दिन जब वे बैतनिय्याह से निकल रहे थे, उसे
बहुत भूख लगी थी। 13थोड़ी दूर पर उसे अंजीर का एक
हरा भरा पेड़ दिखाई दिया। यह देखने के लिये वह पेड़ के
पास पहुँचा कि कहीं उसे उसी पर कुछ मिल जाये। किन्तु
जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे पत्तों के सिवाय कुछ न मिला
क्योंकि अंजीरों की ऋतु नहीं थी। 14तब उसने पेड़ से
कहा, "अब आगे से कभी कोई तेरा फल न खाये।" उसके
शिष्यों ने यह सुना।

यीशु का मन्दिर जाना

15फिर वे यरुशलेम को चल पड़े। जब उन्होंने मन्दिर
में प्रवेश किया तो यीशु ने उन लोगों को जो मन्दिर में ले
बेच कर रहे थे, बाहर निकालना शुरू कर दिया। उसने
पैसे का लेन देन करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और
कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। 16और उसने
मंदिर में से किसी को कुछ भी ले जाने नहीं दिया। 17फिर
उसने शिक्षा देते हुए उनसे कहा, "क्या शास्त्रों में यह नहीं
लिखा है, 'मेरा घर सभी जाति के लोगों के लिये प्रार्थना–गृह
कहलायेगा?' किन्तु तुमने उसे 'चोरों का अड्डा' बना दिया
है।"

18जब प्रधान याजकों और धर्मशास्त्रियों ने यह सुना तो
वे उसे मारने का कोई रास्ता ढूँढने लगे। क्योंकि भीड़ के
सभी लोग उसके उपदेश से चकित थे। इसलिये वे उससे
डरते थे। 19फिर जब शाम हुई, तो वे नगर से बाहर निकले।

विश्वास की शक्ति

20अगले दिन सुबह जब यीशु अपने शिष्यों के साथ जा
रहा था तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक से
सूखा देखा। 21तब पतरस ने याद करते हुए यीशु से कहा,
"हे रब्बी, देख! जिस अंजीर के पेड़ को तूने शाप दिया था,
वह सूख गया है!"

22यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर में विश्वास
रखो। 23मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: यदि कोई इस पहाड़ से
यह कहे, 'तू उखड़ कर समुद्र में जा गिर' और उसके मन
में किसी तरह का कोई संदेह न हो बल्कि विश्वास हो कि
जैसा उसने कहा है, वैसा ही हो जायेगा तो उसके लिये
वैसा ही होगा। 24इसीलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम
प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, विश्वास करो वह तुम्हें मिल
गया है, वह तुम्हारा हो गया है। 25और जब कभी तुम
प्रार्थना करते खड़े होते हो तो यदि तुम्हें किसी से कोई
शिकायत है तो उसे क्षमा कर दो ताकि स्वर्ग में स्थित
तुम्हारा परम पिता तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें भी क्षमा
कर दे।" 26["किन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे
तो तुम्हारा स्वर्ग में स्थित पिता तुम्हारे पापों को भी क्षमा
नहीं करेगा।"]*

यीशु के अधिकार पर यहूदी नेताओं को संदेह

27फिर वे यरुशलेम लौट आये। यीशु जब मन्दिर में
टहल रहा था तो प्रमुख याजक, धर्मशास्त्री और बुजुर्ग

पद 26 कुछ प्रारम्भिक यूनानी प्रतियों में पद 26 जोड़ा गया है।

यहूदी नेता उसके पास आये। 28और बोले, "तू इन कार्यों को किस अधिकार से करता है? इन्हें करने का अधिकार तुझे किसने दिया है?"

29यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, यदि मुझे उत्तर दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं यह कार्य किस अधिकार से करता हूँ। 30जो बपतिस्मा यूहन्ना दिया करता था, वह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था या मनुष्य से? मुझे उत्तर दो!"

31वे यीशु के प्रश्न पर यह कहते हुए आपस में विचार करने लगे, "यदि हम यह कहते हैं, 'यह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था,' तो यह कहेगा, 'तो तुम उसका विश्वास क्यों नहीं करते?' 32किन्तु यदि हम यह कहते हैं, 'वह मनुष्य से प्राप्त हुआ था,' तो लोग हम पर ही क्रोध करेंगे।" (वे लोगों से बहुत डरते थे क्योंकि सभी लोग यह मानते थे कि यूहन्ना वास्तव में एक भविष्यवक्ता है।) 33इसलिये उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते।"

इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं ये कार्य किस अधिकार से करता हूँ।"

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

12 यीशु दृष्टान्त कथाओं का सहारा लेते हुए उनसे कहने लगा: "एक व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों तरफ़ दीवार खड़ी कर दी। फिर अंगूर के रस के लिए एक कुण्ड बनाया और फिर उसे कुछ किसानों को किराये पर दे कर, यात्रा पर निकल पड़ा। 2फिर अंगूर पकने की ऋतु में उसने उन किसानों के पास अपना एक दास भेजा ताकि वह किसानों से बगीचे में जो अंगूर हुए हैं, उनमें से उसका हिस्सा ले आये। 3किन्तु उन्होंने पकड़ कर उस दास की मार-पिटाई की और खाली हाथों वहाँ से भगा दिया। 4उसने एक और दास उनके पास भेजा। उन्होंने उसके सिर पर वार करते हुए उसका बुरी तरह अपमान किया। 5उसने फिर एक और दास भेजा जिसकी उन्होंने हत्या कर डाली। उसने ऐसे ही और भी अनेक दास भेजे जिनमें से उन्होंने कुछ की मार-पिटाई की और कितनों को मार डाला।

6"अब उसके पास भेजने को अपना प्यारा पुत्र ही बचा था। आखिरकार उसने उसे भी उनके पास यह कहते हुए भेज दिया, 'वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे ही।'

7"उन किसानों ने एक दूसरे से कहा, 'यह तो उसका उत्तराधिकारी है। आओ इसे मार डालें। इससे उत्तराधिकार हमारा हो जायेगा।' 8इस तरह उन्होंने उसे पकड़ कर मार डाला और अंगूरों के बगीचे से बाहर फेंक दिया।

9"इस पर अंगूर के बगीचे का मालिक क्या करेगा? वह आकर उन किसानों को मार डालेगा और बगीचा दूसरों को दे देगा। 10क्या तुमने शास्त्र का यह वचन नहीं पढ़ा है:

'वह पत्थर जिसे कारीगरों ने बेकार माना,
वही कोने का पत्थर बन गया।'
11 यह प्रभु ने किया,
जो हमारी दृष्टि में अद्भुत है।'"

भजन संहिता 118:22-23

12वे यह समझ गये थे कि उसने जो दृष्टान्त कहा है, उनके विरोध में था। सो वे उसे बंदी बनाने का कोई रास्ता ढूँढने लगे, पर लोगों से वे डरते थे इसलिये उसे छोड़ कर चले गये।

यीशु को छलने का प्रयत्न

13तब उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदियों को उसे बातों में फसाने के लिये उसके पास भेजा। 14वे उसके पास आये और बोले, "गुरु, हम जानते हैं कि तू बहुत ईमानदार है और तू इस बात की तनिक भी परवाह नहीं करता कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं। क्योंकि तू मनुष्यों की हैसियत या रुतबे पर ध्यान दिये बिना प्रभु के मार्ग की सच्ची शिक्षा देता है। सो बता कैसर को कर देना उचित है या नहीं? हम उसे कर चुकायें या न चुकायें?"

15यीशु उनकी चाल समझ गया। उसने उनसे कहा, "तुम मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार लाओ ताकि मैं उसे देख सकूँ।" 16सो वे दीनार ले आये। फिर यीशु ने उनसे पूछा, "इस पर किस का चेहरा और नाम अंकित है?" उन्होंने कहा, "कैसर का।"

17तब यीशु ने उन्हें बताया, "जो कैसर का है, उसे कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को दो।" तब वे बहुत चकित हुए।

सदूकियों की चाल

18फिर कुछ सदूकी, जो पुनर्जीवन को नहीं मानते, उसके पास आये और उन्होंने उससे पूछा, 19"हे गुरु,

मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई मर जाये और उसकी पत्नी के कोई बच्चा न हो तो उसके भाई को चाहिये कि वह उसे ब्याह ले और फिर अपने भाई के वंश को बढ़ाये। 20एक बार की बात है कि सात भाई थे। सबसे बड़े भाई ने ब्याह किया और बिना कोई बच्चा छोड़े वह मर गया। 21फिर दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया, पर वह भी बिना किसी संतान के ही मर गया। तीसरे भाई ने भी वैसा ही किया। 22सातों में से किसी ने भी कोई बच्चा नहीं छोड़ा। आखिरकार वह स्त्री भी मर गयी। 23मौत के बाद जब वे लोग फिर जी उठेंगे, तो बता वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वे सातों ही उसे अपनी पत्नी के रूप में रख चुके थे।"

24यीशु ने उनसे कहा, "तुम न तो शास्त्रों को जानते हो, और न ही परमेश्वर की शक्ति को। निश्चय ही क्या यही कारण नहीं है जिससे तुम भटक गये हो? 25क्योंकि वे लोग जब मरे हुओं में से जी उठेंगे तो उनके विवाह नहीं होंगे, बल्कि वे स्वर्गदूतों के समान स्वर्ग में होंगे। 26मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुमने मूसा की पुस्तक में झाड़ी के बारे में जो लिखा गया है, नहीं पढ़ा? वहाँ परमेश्वर ने मूसा से कहा था, 'मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ और याकूब का परमेश्वर हूँ।'* 27वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है। तुम लोग बहुत बड़ी भूल में पड़े हो!"

सबसे बड़ा आदेश

28फिर एक यहूदी धर्मशास्त्री आया और उसने उन्हें वाद-विवाद करते सुना। यह देख कर कि यीशु ने उन्हें किस अच्छे ढंग से उत्तर दिया है, उसने यीशु से पूछा, "सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आदेश कौन सा है?"

29यीशु ने उत्तर दिया, "सबसे महत्त्वपूर्ण आदेश यह है: 'हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु है। 30समूचे मन से, समूचे जीवन से, समूची बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।'* 31दूसरा आदेश यह है: 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।'* इन आदेशों से बड़ा और कोई आदेश नहीं है।"

32इस पर यहूदी धर्मशास्त्री ने उससे कहा, "गुरु, तूने ठीक कहा। तेरा यह कहना ठीक है कि परमेश्वर एक है, उसके अलावा और दूसरा कोई नहीं है। 33अपने समूचे मन से, सारी समझ-बूझ से सारी शक्ति से परमेश्वर को प्रेम करना और अपने समान अपने पड़ोसी से प्यार रखना, सारी बलियों और समर्पित भेंटों से जिनका विधान किया गया है, अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

34जब यीशु ने देखा कि उस व्यक्ति ने समझदारी के साथ उत्तर दिया है तो वह उससे बोला, "तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं है।" इसके बाद किसी और ने उससे कोई और प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया।

35फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए कहा, "धर्मशास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है? 36दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर कहा था:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा:
मेरी दाहिनी ओर बैठ जब तक मैं
तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों तले न कर दूँ।'
भजन संहिता 110:1

37दाऊद स्वयं उसे 'प्रभु' कहता है। फिर मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?" एक बड़ी भीड़ प्रसन्नता के साथ उसे सुन रही थी।

38अपने उपदेश में उसने कहा, "धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे अपने लम्बे चोगे पहने हुए इधर उधर घूमना पसंद करते हैं। बाज़ारों में अपने को नमस्कार करवाना उन्हें भाता है। 39और प्रार्थना सभागारों में वे महत्त्वपूर्ण आसनों पर बैठना चाहते हैं। वे जेवनारों में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान पाने की इच्छा रखते हैं। 40वे विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हैं। दिखावे के लिये वे लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ बोलते हैं। इन लोगों को कड़े से कड़ा दण्ड मिलेगा।"

सच्चा दान

41यीशु दान-पात्र के सामने बैठा हुआ देख रहा था कि लोग दान पात्र में किस तरह धन डाल रहे हैं। बहुत से धनी लोगों ने बहुत सा धन डाला। 42फिर वहाँ एक गरीब विधवा आयी और उसने उसमें दो दमड़ियाँ डालीं जो एक पैसे के बराबर भी नहीं थीं।

43फिर उसने अपने चेलों को पास बुलाया और उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, धनवानों द्वारा इस दान-पात्र

"मैं इब्राहीम ... हूँ" देखें निर्गमन 3:6
'हे इस्राएल ... करना चाहिये' देखें व्यवस्था. 6:4-5
"अपने पड़ोसी ... करता है" लैव्य. 19:18

में डाले गये प्रचुर दान से इस निर्धन विधवा का यह दान कहीं महान है। 44क्योंकि उन्होंने जो कुछ उनके पास फालतू था, उसमें से दान दिया, किन्तु इसने अपनी दीनता में जो कुछ इसके पास था सब कुछ दे डाला। इसके पास इतना सा ही था जो इसके जीवन का सहारा था!"

यीशु द्वारा विनाश की भविष्यवाणी

13 जब वह मंदिर से जा रहा था, उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "गुरु, देख! ये पत्थर और भवन कितने अनोखे हैं।"

2इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तू इन विशाल भवनों को देख रहा है? यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रहेगा। एक-एक पत्थर ढहा दिया जायेगा।"

3जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था तो उससे पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने अकेले में पूछा, 4"हमें बता, यह सब कुछ कब घटेगा? जब ये सब कुछ पूरा होने को होगा तो उस समय कैसे संकेत होंगे?"

5इस पर यीशु कहने लगा "सावधान! कोई तुम्हें छलने न पाये। 6मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और दावा करेंगे 'मैं वही हूँ।' वे बहुतों को छलेंगे। 7जब तुम युद्धों या युद्धों की अफवाहों के बारे में सुनो तो घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं है। 8एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़े होंगे। बहुत से स्थानों पर भूचाल आयेंगे और अकाल पड़ेंगे। ये पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

9"अपने बारे में सचेत रहो। वे लोग तुम्हें न्यायालयों के हवाले कर देंगे और फिर तुम्हें उनके सभागारों में पीटा जाएगा और मेरे कारण तुम्हें शासकों और राजाओं के आगे खड़ा होना होगा ताकि उन्हें कोई प्रमाण मिल सके। 10किन्तु यह आवश्यक है कि पहले सब किसी को सुसमाचार सुना दिया जाये। 11और जब कभी वे तुम्हें पकड़ कर तुम पर मुकदमा चलायें तो पहले से ही यह चिन्ता मत करने लगना कि तुम्हें क्या कहना है। उस समय जो कुछ तुम्हें बताया जाये, वही बोलना क्योंकि ये तुम नहीं हो जो बोल रहे हो, बल्कि बोलने वाला तो पवित्र आत्मा है।

12"भाई, भाई को धोखे से पकड़वा कर मरवा डालेगा। पिता, पुत्र को धोखे से पकड़वायेगा। और बाल बच्चे अपने माता-पिता के विरोध में खड़े होकर उन्हें मरवायेंगे। 13मेरे कारण सब लोग तुमसे घृणा करेंगे। किन्तु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसका उद्धार होगा।

14"जब तुम 'भयानक विनाशकारी वस्तुओं को', जहाँ वे नहीं होनी चाहियें, वहाँ खड़े देखो" (पढ़ने वाला स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) "तब जो लोग यहूदिया में हों, उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये और 15जो लोग अपने घर की छत पर हों, वे घर में भीतर जा कर कुछ भी लाने के लिये नीचे न उतरें। 16और जो बाहर मैदान में हों, वह पीछे मुड़ कर अपना वस्त्र तक न लें। 17उन स्त्रियों के लिये जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत भयानक होंगे। 18प्रार्थना करो कि यह सब कुछ सर्दियों में न हो। 19उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने इस सृष्टि को रचा है, आज तक न कभी आयी है और न कभी आयेगी। 20और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटा न दिया होता तो कोई भी नहीं बचता। किन्तु उन चुने हुए व्यक्तियों के कारण जिन्हें उसने चुना है, उसने उस समय को कम किया है। 21उन दिनों यदि कोई तुमसे कहे, 'देखो, यह रहा मसीह!' या 'वह रहा मसीह!' तो उसका विश्वास मत करना। 22क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता दिखाई पड़ने लगेंगे। और वे ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न दर्शाएँगे और अद्‌भुत काम करेंगे कि हो सके तो चुने हुओं को भी चक्कर में डाल दें। 23इसीलिये तुम सावधान रहना। मैंने समय से पहले ही तुम्हें सब कुछ बता दिया है।

24"उन दिनों यातना के उस काल के बाद,

'सूरज काला पड़ जायेगा,
चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी।
25 आकाश से तारे गिरने लगेंगे
और आकाश में महाशक्तियाँ
झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4

26"तब लोग मनुष्य के पुत्र को महाशक्ति और महिमा के साथ बादलों में प्रकट होते देखेंगे। 27फिर वह अपने दूतों को भेज कर चारों दिशाओं, पृथ्वी के एक छोर से आकाश के दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

28"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो कि जब उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती है और उस पर कोंपलें फूटने लगती हैं

तो तुम जान जाते हो कि ग्रीष्म ऋतु आने को है। 29ऐसे ही जब तुम यह सब कुछ घटित होते देखो तो समझ जाना कि वह समय* निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक। 30मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि निश्चित रूप से इन लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी। 31धरती और आकाश नष्ट हो जायेंगे किन्तु मेरा वचन कभी न टलेगा।

32"उस दिन या उस घड़ी के बारे में किसी को कुछ पता नहीं, न स्वर्ग में दूतों को और न अभी मनुष्य के पुत्र को, केवल परम पिता परमेश्वर जानता है। 33सावधान! जागते रहो! क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आ जायेगा। 34यह ऐसे ही है जैसे कोई व्यक्ति किसी यात्रा पर जाते हुए सेवकों के ऊपर अपना घर छोड़ जाये और हर एक को उसका अपना अपना काम दे जाये। तथा चौकीदार को यह आज्ञा दे कि वह जागता रहे। 35इसलिये तुम भी जागते रहो क्योंकि घर का स्वामी न जाने कब आ जाये। साँझ गये, आधी रात, मुर्गे की बाँग देने के समय या फिर दिन निकले। 36यदि वह अचानक आ जाये तो ऐसा करो जिससे वह तुम्हें सोते न पाये। 37जो मैं तुमसे कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ 'जागते रहो!'"

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

14 फ़सह पर्व और बिना ख़मीर की रोटी का उत्सव* आने से दो दिन पहले की बात है कि प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री कोई ऐसा रास्ता ढूँढ रहे थे जिससे चालाकी के साथ उसे बंदी बनाया जाये और मार डाला जाये। 2वे कह रहे थे, "किन्तु यह हमें पर्व के दिनों में नहीं करना चाहिये, नहीं तो हो सकता है, लोग कोई फसाद खड़ा करें।"

यीशु पर इत्र उँडेलना

3जब बैतनिय्याह में यीशु शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा था, तभी एक स्त्री सफेद चिकने स्फटिक के एक पात्र में शुद्ध बाल छड़ का इत्र लिये आयी। उसने उस पात्र को तोड़ा और इत्र को यीशु के सिर पर उँडेल दिया।

4इससे वहाँ कुछ लोग बिगड़ कर आपस में कहने लगे, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी है? 5यह इत्र तीन सौ दीनारी से भी अधिक में बेचा जा सकता था। और फिर उस धन को कंगालों में बाँटा जा सकता था।" उन्होंने उसकी कड़ी आलोचना की।

6तब यीशु ने कहा, "उसे क्यों तंग करते हो? छोड़ो उसे। उसने तो मेरे लिये एक मनोहर काम किया है। 7क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे सो तुम जब चाहो उनकी सहायता कर सकते हो, पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा। 8इस स्त्री ने वही किया जो वह कर सकती थी। उसने समय से पहले ही गाड़े जाने के लिये, मेरे शरीर पर सुगन्ध छिड़क कर उसे तैयार किया है। 9मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: सारे संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार का प्रचार-प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में जो कुछ इस ने किया है, उसकी चर्चा होगी।"

10तब यहूदा इसकरियोती जो उसके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजक के पास यीशु को धोखे से पकड़वाने के लिए गया। 11वे उस की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन दिया। इसलिए फिर यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

12बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव से एक दिन पहले, जब फ़सह (मेमने) की बलि दी जाया करती थी उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि हम कहाँ जा कर तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी करें?"

13तब उसने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, "नगर में जाओ, जहाँ तुम्हें एक व्यक्ति जल का घड़ा लिये मिले, उसके पीछे हो लेना। 14फिर जहाँ कहीं भी वह भीतर जाये, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु ने पूछा है भोजन का मेरा वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह का खाना खा सकूँ।' 15फिर वह तुम्हें ऊपर का एक बड़ा सजा-सजाया तैयार कमरा दिखायेगा, वहीं हमारे लिये तैयारी करो।"

16तब उसके शिष्य वहाँ से नगर को चल दिये जहाँ उन्होंने हर बात वैसी ही पायी जैसी उनसे यीशु ने कही थी। तब उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया है।

वह समय यहाँ यीशु जिस समय की चर्चा कर रहा है, वह समय है जब कोई बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटेगी। देखें लूका 21:31 जहाँ यीशु ने कहा है कि वही परमेश्वर के राज्य के आने का समय है।

बिना ख़मीर की रोटी का उत्सव यहूदियों का यह पर्व एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उत्सव हैं। इस दिन वे बिना खमीर की रोटी के साथ विशेष प्रकार का भोजन करते है।

17दिन ढले अपने बारह शिष्यों के साथ यीशु वहाँ पहुँचा।
18जब वे बैठे खाना खा रहे थे, तब यीशु ने कहा, "मैं सत्य
कहता हूँ: तुम में से एक जो मेरे साथ भोजन कर रहा है,
वही मुझे धोखे से पकड़वायेगा।"
19इससे वे दुखी हो कर एक दूसरे से कहने लगे,
"निश्चय ही वह मैं नहीं हूँ!"
20तब यीशु ने उनसे कहा, "वह बारहों में से वही एक
है, जो मेरे साथ एक ही थाली में खाता है। 21मनुष्य के पुत्र
को तो जाना ही है, जैसा कि उसके बारे में लिखा है। पर
उस व्यक्ति को धिक्कार है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र
पकड़वाया जाएगा। उस व्यक्ति के लिये कितना अच्छा
होता कि वह पैदा ही न हुआ होता।"

प्रभु का भोज

22जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, धन्यवाद
दिया, रोटी को तोड़ा और उसे उनको देते हुए कहा, "लो,
यह मेरी देह है।"
23फिर उसने कटोरा उठाया, धन्यवाद किया और उसे
उन्हें दिया और उन सब ने उसमें से पीया।
24तब यीशु बोला, "यह मेरा लहू है जो एक नए वाचा
का आरंभ है। यह बहुतों के लिये बहाया जा रहा है।
25तुमसे सत्य कहता हूँ कि अब मैं उस दिन तक दाखमधु
को चखूँगा तक नहीं जब तक परमेश्वर के राज्य में नया
दाखमधु न पीऊँ।"
26तब एक गीत गा कर वे जैतून के पहाड़ पर चले
गये।

यीशु की भविष्यवाणी–सब शिष्य उसे छोड़ जायेंगे

27यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब का विश्वास डिग
जायेगा। क्योंकि लिखा है:

'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और भेड़ें
तितर–बितर हो जायेंगी।'

जकर्याह 13:7

28किन्तु फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही
गलील चला जाऊँगा।"
29तब पतरस बोला, "चाहे सब अपना विश्वास खो बैठें,
पर मैं नही खोऊँगा।"
30इस पर यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य
कहता हूँ, आज, इसी रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले
तू तीन बार मुझे नकार चुकेगा।"
31इस पर पतरस ने और भी बल देते हुए कहा, "यदि
मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तो भी मैं तुझे कभी नकारूँगा
नहीं!" तब बाकी सब शिष्यों ने भी ऐसा ही कहा।

यीशु की एकांत प्रार्थना

32फिर वे एक ऐसे स्थान पर आये जिसे गतसमने कहा
जाता था। वहाँ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जब तक मैं
प्रार्थना करता हूँ, तुम यहीं बैठो।" 33और पतरस, याकूब
और यूहन्ना को वह अपने साथ ले गया। वह बहुत दुखी
और व्याकुल हो रहा था। 34उसने उनसे कहा, "मेरा मन
दुखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम यहीं ठहरो और
सावधान रहो।"
35फिर थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर
झुक कर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी
मुझ पर से टल जाये। 36फिर उसने कहा, "हे परम पिता!
तेरे लिये सब कुछ सम्भव है। इस कटोरे* को मुझ से दूर
कर। फिर जो कुछ भी मैं चाहता हूँ, वह नहीं बल्कि जो तू
चाहता है, वही कर।"
37फिर वह लौटा तो उसने अपने शिष्यों को सोते देख
पतरस से कहा, "शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक
घड़ी भी जाग नहीं सका? 38जागते रहो और प्रार्थना करो
ताकि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो चाहती है
किन्तु शरीर निर्बल है।"
39वह फिर चला गया और वैसे ही वचन बोलते हुए
उसने प्रार्थना की। 40जब वह दुबारा लौटा तो उसने उन्हें
फिर सोते पाया। उनकी आँखों में नींद भरी थी। उन्हें सूझ
नहीं रहा था कि उसे क्या उत्तर दें।
41वह तीसरी बार फिर लौट कर आया और उनसे
बोला, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? अच्छा,
तो सोते रहो। वह घड़ी आ पहुँची है जब मनुष्य का पुत्र
धोखे से पकड़वाया जा कर पापियों के हाथों सौंपा जा

कटोरे यहाँ यीशु उन यातनाओं की ओर संकेत कर रहा है
जो आगे चल कर उसे झेलनी है। ये यातनाएँ बहुत कठोर होंगी।
उस कटोरे से पीने के समान जिसमें कुछ ऐसा भरा है, जिसे
पीना बहुत कठिन है।

रहा है। 42खड़े हो जाओ! आओ चलें। देखो, यह आ रहा है, मुझे धोखे से पकड़वाने वाला व्यक्ति।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

43यीशु बोल ही रहा था कि उसके बारह शिष्यों में से एक यहूदा वहाँ दिखाई पड़ा। उसके साथ लाठियाँ और तलवारें लिए एक भीड़ थी, जिसे याजकों, धर्मशास्त्रियों और बुजुर्ग यहूदी नेताओं ने भेजा था।

44धोखे से पकड़वाने वाले ने उन्हें यह संकेत बता रखा था, "जिसे मैं चूँमू वही वह है। उसे हिरासत में ले लेना और पकड़ कर सावधानी से ले जाना।"

45सो जैसे ही यहूदा वहाँ आया, उसने यीशु के पास जाकर कहा, "रब्बी!" और उसे चूम लिया। 46फिर तुरंत उन्होंने उसे पकड़ कर हिरासत में ले लिया। 47उसके एक शिष्य ने जो उसके पास ही खड़ा था अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के एक दास पर चला दी जिससे उसका कान कट गया।

48फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या मैं कोई अपराधी हूँ जिसे पकड़ने तुम लाठी-तलवार ले कर आये हो? 49हर दिन मन्दिर में उपदेश देते हुए मैं तुम्हारे साथ ही था किन्तु तुमने मुझे नहीं पकड़ा। अब यह हुआ ताकि शास्त्र का वचन पूरा हो।" 50फिर उसके सभी शिष्य उसे अकेला छोड़ भाग खड़े हुए।

51अपनी वस्त्र रहित देह पर चादर लपेटे एक नौजवान उसके पीछे आ रहा था। उन्होंने उसे पकड़ना चाहा 52किन्तु वह अपनी चादर छोड़ कर नंगा भाग खड़ा हुआ।

यीशु की पेशी

53वे यीशु को प्रधान याजक के पास ले गये। फिर सभी प्रमुख याजक, बुजुर्ग यहूदी नेता और धर्मशास्त्री इकटठे हुए। 54पतरस उससे दूर-दूर रहते हुए उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ आग तापने लगा।

55सारी यहूदी महासभा और प्रमुख याजक यीशु को मृत्य दण्ड देने के लिये उसके विरोध में कोई प्रमाण ढूँढने का यत्न कर रहे थे पर ढूँढ नहीं पाये। 56बहुतों ने उसके विरोध में झूठी गवाहियाँ दीं, पर वे गवाहियाँ आपस में विरोधी थीं।

57फिर कुछ लोग खड़े हुए और उसके विरोध में झूठी गवाही देते हुए कहने लगे, 58"हमने इसे यह कहते सुना है, 'मनुष्यों के हाथों बने इस मंदिर को मैं ढहा दूँगा और फिर तीन दिन के भीतर दूसरा बना दूँगा जो हाथों से बना नहीं होगा।'" 59किन्तु इसमें भी उनकी गवाहियाँ एक सी नहीं थीं।

60तब उनके सामने महायाजक ने खड़े होकर यीशु से पूछा, "ये लोग तेरे विरोध में ये क्या गवाहियाँ दे रहे हैं? क्या उत्तर में तुझे कुछ नही कहना?" 61इस पर यीशु चुप रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

महायाजक ने उससे फिर पूछा, "क्या तू पवित्र परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

62यीशु बोला, "मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों में आते देखोगे।"

63महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ते हुए कहा, "हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है? 64तुमने ये अपमानपूर्ण बातें कहते हुए इसे सुना, अब तुम्हारा क्या विचार है?"

उन सब ने उसे अपराधी ठहराते हुए कहा, "इसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिये।" 65तब कुछ लोग उस पर थूकते, कुछ उसका मुँह ढकते, कुछ घूँसे मारते और कुछ हँसी उड़ाते कहने लगे, "भविष्यवाणी कर!" और फिर पहरेदारों ने पकड़ कर उसे पीटा।

पतरस का यीशु को नकारना

66पतरस अभी नीचे आँगन ही में बैठा था कि महायाजक की एक दासी आई। 67जब उसने पतरस को वहाँ आग तापते देखा तो बड़े ध्यान से उसे पहचान कर बोली, "तू भी तो उस यीशु नासरी के ही साथ था।" 68किन्तु पतरस मुकर गया और कहने लगा, "मैं नहीं जानता या मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तू क्या कह रही है।" यह कहते हुए वह ड्योढ़ी तक चला गया, और मुर्गे ने बाँग दी।*

69उस दासी ने जब उसे दुबारा देखा तो वहाँ खड़े लोगों से फिर कहने लगी, "यह व्यक्ति भी उन ही में से एक है।"70पतरस फिर मुकर गया। फिर थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोगों ने पतरस से कहा, "निश्चय ही तू उनमें से एक है क्योंकि तू भी गलील का है।"

और ... दी बहुत से युनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

71तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने
लगा, "जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, उस व्यक्ति को
मैं नहीं जानता!"
72तत्काल, मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी। पतरस को उसी
समय वे शब्द याद हो आये जो उससे यीशु ने कहे थे:
"इससे पहले कि मुर्गा दो बार बाँग दे, तू मुझे तीन बार
नकारेगा।" तब पतरस जैसे टूट गया। वह फूट-फूट कर
रोने लगा।

यीशु पिलातुस के सामने पेश

15 जैस ही सुबह हुई महायाजकों, धर्मशास्त्रियों,
बुजुर्ग यहूदी नेताओं और समूची यहूदी महासभा
ने एक योजना बनायी। वे यीशु को बँधवा कर ले गये और
उसे पिलातुस को सौंप दिया। 2पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या
तू यहूदियों का राजा है?"
यीशु ने उत्तर दिया, "ऐसा ही है। तू स्वयं कह रहा है।"
3फिर प्रमुख याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये।
4पिलातुस ने उससे फिर पूछा, "क्या तुझे उत्तर नहीं देना
है? देख वे कितनी बातों का दोष तुझ पर लगा रहे हैं।"
5किन्तु यीशु ने अब भी कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर
पिलातुस को बहुत अचरज हुआ।

पिलातुस यीशु को छोड़ने में विफल

6फ़सह पर्व के अवसर पर पिलातुस किसी भी एक
बंदी को, जिसे लोग चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया करता
था। 7बरअब्बा नाम का एक बंदी उन बलवाइयों के साथ
जेल में था जिन्होंने दंगें में हत्या की थी। 8लोग आये और
पिलातुस से कहने लगे कि वह जैसा सदा से उनके लिए
करता आया है, वैसा ही करे।
9पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" 10पिलातुस ने
यह इसलिए कहा कि वह जानता था कि प्रमुख याजकों ने
ईर्ष्या-द्वेष के कारण ही उसे पकड़वाया है। 11किन्तु प्रमुख
याजकों ने भीड़ को उकसाया कि वह उसके बजाय उनके
लिये बरअब्बा को ही छोड़े।
12किन्तु पिलातुस ने उनसे बातचीत करके फिर पूछा,
"जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसका मैं क्या
करूँ बताओ तुम क्या चाहते हो?"
13उत्तर में वे चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"
14तब पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्यों, उसने ऐसा क्या
अपराध किया है?"
पर उन्होंने और अधिक चिल्ला कर कहा, "उसे क्रूस
पर चढ़ा दो।"
15पिलातुस भीड़ को खुश करना चाहता था इसलिये
उसने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को
कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।
16फिर सिपाही उसे रोम के राज्यपाल निवास में ले
गये। उन्होंने सिपाहियों की पूरी पलटन को बुला लिया।
17फिर उन्होंने यीशु को बैंजनी रंग का वस्त्र पहनाया
और काँटों का एक ताज बना कर उसके सिर पर रख
दिया। 18फिर उसे सलामी देने लगे: "यहूदियों के राजा का
स्वागत है!" 19वे उसके सिर पर सरकंडे मारते जा रहे थे।
वे उस पर थूक रहे थे। और घुटनों के बल झुक कर वे
उसके आगे नमन करते जाते थे। 20इस तरह जब वे उसकी
खिल्ली उड़ा चुके तो उन्होंने उसका बैंजनी वस्त्र उतारा
और उसे उसके अपने कपड़े पहना दिये। और फिर उसे
क्रूस पर चढ़ाने, बाहर ले गये।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

21उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक
व्यक्ति, रास्ते में मिला। वह गाँव से आ रहा था। वह सिकन्दर
और रुफुस का पिता था। सिपाहियों ने उस पर दबाव डाला
कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले। 22फिर वे यीशु को
गुलगुता नामक स्थान पर ले गये (जिसका अर्थ है
"खोपड़ी-स्थान।") 23तब उन्होंने उसे लोहबान मिला हुआ
दाखरस पीने को दिया। किन्तु उसने उसे नहीं लिया। 24फिर
उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया। उसके वस्त्र उन्होंने बाँट
लिये और यह देखने के लिए कि कौन क्या ले, उन्होंने
पासे फेंके।
25दिन के नौ बजे थे, जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।
26उसके विरुद्ध एक लिखित अभियोग पत्र उस पर अंकित
था: "यहूदियों का राजा।" 27उसके साथ दो डाकू भी
क्रूस पर चढ़ाये गये। एक उसके दाहिनी ओर और दूसरा
बाँई ओर। 28["तब धर्मशास्त्र का वह वचन, 'वह डाकूओं
के संग गिना गया', पूरा हुआ।"]* 29उसके पास से निकलते
हुए लोग उसका अपमान कर रहे थे। अपना सिर

पद 28 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 28 जोड़ा गया है।

नचा–नचा कर वे कहते, "अरे, वाह! तू वही है जो मंदिर को ढहा कर तीन दिन में फिर बनाने वाला था। 30अब क्रूस पर से नीचे उतर और अपने आप को तो बचा ले!"

31इसी तरह प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों ने भी यीशु की खिल्ली उड़ाई। वे आपस में कहने लगे, "यह औरों का उद्धार करता था, पर स्वयं अपने को नहीं बचा सकता है। 32अब इस 'मसीह' और 'इस्राएल के राजा को' क्रूस पर से नीचे तो उतरने दे ताकि हम यह देख कर उसमें विश्वास कर सकें।" उन दोनों ने भी, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसका अपमान किया।

यीशु की मृत्यु

33फिर समूची धरती पर दोपहर तक अंधकार छाया रहा। 34दिन के तीन बजे ऊँचे स्वर में पुकारते हुए यीशु ने कहा, "इलोई, इलोई, लमा शबकतनी।" अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों भुला दिया?"

35जो पास में खड़े थे, उनमें से कुछ ने जब यह सुना तो वे बोले, "सुनो! यह एलिय्याह को पुकार रहा है।"

36तब एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को पीने के लिए दिया और कहा, "ठहरो, देखते हैं कि इसे नीचे उतारने के लिए एलिय्याह आता है कि नहीं।"

37फिर यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा और प्राण त्याग दिये।

38तभी मंदिर का पट ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। 39सेना के एक अधिकारी ने जो यीशु के सामने खड़ा था, उसे पुकारते हुए सुना और देखा कि उसने प्राण कैसे त्यागे। उसने कहा, "यह व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था!"

40कुछ स्त्रियाँ वहाँ दूर से खड़ी देख रही थीं जिनमें मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम और सलौमी थीं। 41जब यीशु गलील में था तो ये स्त्रियाँ उसकी अनुयायी थीं और उसकी सेवा करती थीं। वहीं और भी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जो उसके साथ यरुशलेम तक आयी थीं।

यीशु का दफ़नाया जाना

42शाम हो चुकी थी और क्योंकि सब्त के पहले का, वह तैयारी का दिन था 43इसलिये अरिमतिया का यूसुफ़ आया। वह यहूदी महासभा का सम्मानित सदस्य था और परमेश्वर के राज्य के आने की बाट जोहता था। साहस के साथ वह पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। 44पिलातुस को बड़ा अचरज हुआ कि वह इतनी जल्दी कैसे मर गया। उसने सेना के अधिकारी को बुलाया और उससे पूछा क्या उसको मरे काफी देर हो चुकी है? 45फिर जब उसने सेनानायक से ब्यौरा सुन लिया तो यूसूफ को शव दे दिया। 46फिर यूसुफ ने सन के उत्तम रेशों का बना थोड़ा कपड़ा खरीदा, यीशु को क्रूस पर से नीचे उतारा, उसके शव को उस वस्त्र में लपेटा और उसे एक कब्र में रख दिया जिसे शिला को काट कर बनाया गया था। और फिर कब्र के मुँह पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़का कर टिका दिया। 47मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थीं कि यीशु को कहाँ रखा गया है।

यीशु का फिर से जी उठना

16 सब्त का दिन बीत जाने पर मरियम मगदलीनी, सलौमी और याकूब की माँ मरियम ने यीशु के शव का अभिषेक कर पाने के लिये सुगन्ध–सामग्री मोल ली। 2सप्ताह के पहले दिन बड़ी सुबह सूरज निकलते ही वे कब्र पर गयीं। 3वे आपस में कह रही थीं, "हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर को कौन सरकाएगा?"

4फिर जब उन्होंने आँख उठाई तो देखा कि वह बहुत बड़ा पत्थर वहाँ से हटा हुआ है। 5फिर जब वे कब्र के भीतर गयीं तो उन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा है। वे सहम गयीं।

6फिर युवक ने उनसे कहा, "डरो मत, तुम जिस यीशु नासरी को ढूँढ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह जी उठा है! वह यहाँ नहीं है। इस स्थान को देखो जहाँ उन्होंने उसे रखा था। 7अब तुम जाओ और उसके शिष्यों तथा पतरस से कहो कि वह तुम से पहले ही गलील जा रहा है जैसा कि उसने तुमसे कहा था, वह तुम्हें वहीं मिलेगा।"

8तब भय और अचरज में डूबीं वे कब्र से बाहर निकल कर भाग गयीं। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया क्योंकि वे बहुत घबराई हुई थीं

[मरकुस पुस्तक की कुछ आदिम यूनानी प्रतियाँ पद आठ पर ही समाप्त हो जाती हैं।]

कुछ अनुयायियों को यीशु का दर्शन

9सप्ताह के पहले दिन प्रभात में जी उठने के बाद वह
सबसे पहले मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट हुआ
जिसे उसने सात दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था।
10उसने यीशु के साथियों को, जो शोक में डूबे, विलाप
कर रहे थे, जाकर बताया। 11जब उन्होंने सुना कि यीशु
जीवित है और उसने उसे देखा है तो उन्होने विश्वास नहीं
किया।

12इसके बाद उनमें से दो के सामने जब वे खेतों को
जाते हुए, मार्ग में थे, वह एक दूसरे रूप में प्रकट हुआ।
13उन्होंने लौट कर औरों को भी इसकी सूचना दी पर
उन्होंने भी उनका विश्वास नहीं किया।

शिष्यों से यीशु की बातचीत

14बाद में, जब उसके ग्यारहों शिष्य भोजन कर रहे थे,
वह उनके सामने प्रकट हुआ और उसने उन्हें उनके
अविश्वास और मन की जड़ता के लिए डाँटा फटकारा
क्योंकि इन्होंने उनका विश्वास ही नहीं किया था जिन्होंने
जी उठने के बाद उसे देखा था।

15फिर उसने उनसे कहा, "जाओ और सारी दुनिया
के लोगों को सुसमाचार का उपदेश दो। 16जो कोई
विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, उसका उद्धार
होगा और जो अविश्वासी है, वह दोषी ठहराया जायेगा।
17"जो मुझमें विश्वास करेंगे, उनमें ये चिह्न होंगे: वे मेरे
नाम पर दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकेंगे, वे नयी–नयी
भाषा बोलेंगे, 18वे अपने हाथों से साँप पकड़ लेंगे और वे
यदि विष भी पी जायें तो उनको हानि नहीं होगी, वे रोगियों
पर अपने हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।"

19इस प्रकार जब प्रभु यीशु उनसे बात कर चुका तो
उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया। वह परमेश्वर के दाहिने
बैठ गया। 20उसके शिष्यों ने बाहर जा कर सब कहीं
उपदेश दिया, उनके साथ प्रभु काम कर रहा था। प्रभु ने
वचन को आश्चर्यकर्म की शक्ति से युक्त करके सत्य
सिद्ध किया।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html